पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

पौष-माघ, कलियुगाब्द 5118, जनवरी 2017

पारम्परिक भारतीय जीवन पद्धति
कुटुम्ब राष्ट्रीयता व सामाजिक मर्यादाएं

मातृवन्दना

मातृवन्दना

सदस्यता अभियान 2017-18

1-20 फरवरी 2017

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका	सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच
35 हज़ार परिवारों तक पहुंच	दो लाख से अधिक पाठक
नववर्ष का आकर्षक क्लैंडर नि:शुल्क	समाचार ही नहीं संस्कार भी

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

प्रबन्धक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990

email: matrivandanashimla@gmail.com

website: www.matrivandana.org

वार्षिक शुल्क

100 रुपए

आजीवन सदस्य (15 वर्ष)

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

STERLING SPORTS REHAB. & ADVANCE PHYSIOTHERAPY CENTRE

Think Painfree...

Think Physiotherapy

with us

Dr. Gaurav Sharma (PT)

Musculoskeletal & Sports Injury Specialist-Ortho (Gold Medalist)
Internationally Certified in Exercise Testing & Prescription
Co-Founder & H.O.D. of Sterling Physiotherapy Centre

WE TREAT The Following Orthopedic & Sports Conditions:

- Joint Pain
- Arthritis
- Super specialized Center for Back Pain
- Advance rehabilitation for acute & chronic sports injuries
- Advanced & Hi-Tech Equipments

Awareness sessions & Treatment according to work related environment & injuries

Tricity's First Advanced Physiotherapy & Sports Rehabilitation Center

SCO 226-227, 1st Floor, Sector 34 A, Chandigarh-160022 Ph.:0172-4000414

inquiry@ssrp.in, info@ssrp.in www.ssrp.in

वृद्धानां वचनं योऽभ्युत्थानं प्रयोजयेत्।
उत्थानस्य फलं सम्यक् तदा स लभतेऽचिरात्॥

जो व्यक्ति अपने जीवन में अपने से बड़े तथा वृद्धों की बात सुनता है और सुनकर कथनानुसार उनकी सलाह मानकर कार्य करता है उसको निश्चय ही कुछ समय बाद उस कार्य का अच्छा फल मिलता है।

वर्ष : 17 अंक : 1

मातृवन्दना

पौष-माघ, कलियुगाब्द 5118, जनवरी 2017

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
राजेन्द्र शर्मा
महेश्वर दत्त

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सविता प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

पारम्परिक जीवन पद्धति.....

भारतीय संस्कृति अमूल्य धरोहर को समेटे हुए विश्व भर में उसकी अपनी एक पृथक पहचान है। उसकी विशिष्टता का एक मुख्य कारक तत्व पारिवारिक जीवन पद्धति अथवा परिवार संस्था है। वैदिक काल से ही परिवार संस्था कुल-गोत्र एवं वर्णव्यवस्था से परिपुष्ट होती हुई उतरोत्तर सुदृढ़ता को प्राप्त होती रही। उत्तरकाल में भारत के गुलामी की जंजीरों में जकड़े जाने पर यह संस्था अवश्य अव्यवस्थित हुई।

सम्पादकीय	*पारम्परिक जीवन पद्धति को सुदृढ़ बनाएँ*	3
प्रेरक प्रसंग	*पितृदेवो भव:*	4
चिंतन	*बहुमूल्य जीवन का उपहार*	5
आवरण	*कुटुंब, राष्ट्रीयता व सामाजिक मर्यादाएं*	6
संगठनम्	*हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में*	10
पुण्य जयंती	*ऐसे थे अपने दीनदयाल जी*	12
देश-प्रदेश	*अब सिनेमाघरों में बजेगा राष्ट्रगान*	13
देवभूमि	*हाटकोटी मंदिर को*	15
घूमती कलम	*कच्छ के रण से होकर*	17
विविध	*औपनिवेशिकता की बेड़ियां*	20
काव्य-जगत	*परिभाषा प्रेम की*	22
स्वास्थ्य	*समस्त रोगों की अमृत दवा-क्रिफला*	23
कृषि	*किवी बनेगा विकल्प*	24
महिला जगत	*नौकरी छोड़ कचरा प्रबंधन*	26
दृष्टि	*लावारिस बच्चों को*	27
प्रतिक्रिया	*हिन्दुस्तान में कितने पाकिस्तान*	28
समसामयिकी	*निम्नतम स्तर पर राजनीति*	29
बाल जगत	*भारत की सबसे लंबी रेल*	31

पाठकों के पत्र

सम्पादक महोदय,

किसान पिता झबेरी भाई और माता लाड़ बाई के घर 31 अक्तूबर 1875 को जन्मे वल्लभ भाई पटेल चारित्रिक गुणों से सम्पन्न व्यक्ति थे। राष्ट्र प्रेम और दृढ़ इच्छा शक्ति उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके महत्त चरित्र को समझने के लिए मात्र इन दोनों चरित्र-तत्वों से उनके सम्पूर्ण और विराट व्यक्तित्व के दर्शन हो जाते हैं। अपनी कर्तव्यपरायणता, कार्य और वचनों में पूर्ण इमानदारी, निडरता और दृढ संकल्प के बल पर पूरे देश को एक सूत्र में बांध लिया। देश की 565 रियासतें भारत में विलय करके दिखा दिया कि वे सचमुच ही लौह पुरूष हैं। जम्मू-कश्मीर में शेष कांटे की फांस भी नहीं रहती यदि नेहरू जी ने उस वक्त अदूरदर्शिता न दिखाई होती। सरदार वल्लभ भाई पटेल वास्तविक देशभक्त और राजनेता थे। भारत रत्न पटेल जी को कृतज्ञ भारतवासी सदैव स्मरण रखेंगे। मेरा यह मानना है कि यदि सरकार वल्लभ भाई पटेल भारत के प्रथम प्रधान मंत्री होते तो इस देश की स्थिति कुछ और ही होती। कश्मीर समस्या और राम जन्म भूमि विवाद भी आज देखने को नहीं मिलते। धन्य है भारत मां के ऐसे वीर सपूत।

जननी जने तो भक्त जन या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बांझ रहे काहे गवावत नूर। ❖**कृष्ण चंद्र महादेविया, मण्डी, हि0प्र0**

महोदय,

पड़दादा, दादा, पिता, भाई, भतीजा, पौते, दहोते, दहोती, दो जमाता, दोहती के पति, दो सम्धी और अनेक रिश्तेदार जिसके सेना में रह चुके और हैं, जिसने 1939-45 विश्वयुद्ध, 1948 जम्मू कश्मीर, 1965 भारत पाक युद्ध, 1971 को युद्ध लड़ा हो, 1960 से 1964 तक फ्रांस में सेना दी हो, 36 साल सेना में सेवा और सेवानिवृति के पश्चात 36 साल समाज सेवा की हो, 1941-42 में ऊना में संघ शाखाओं का लाभ लिया हो, जो उसी वाहिनी का हो जिसने सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया, ऐसे वयोवृद्ध रामनाथ शर्मा द्वारा पत्र है।

भूमध्यसागर मेडिटेरियन सी, मिसली, जेनोआ होते हुए इस वाहिनी के सुबेदार जोगिन्दर सिंह की कमांड में 1944 में संगरू नदी पार करके मुसोलिनी की सेना को, यह वही इलाका है जहां ''लाशों की दलाली'' कहने वाले और स्वयं गीदड़ की भांति ''जेड़'' सिक्योरिटी के ननहाल हैं। कहता चलूं कि इटली के युद्धबन्दियों को धर्मशाला योल कैंप में रखा गया था।

संयुक्त राष्ट्र में पहले 2 पारा जनरल थिम्मैया के नेतृत्व में कोरिया (1942-54) फिर गाजा में 1956 में और 1 पारा गाजा में 1957-58 में सेवारत रहीं। चीन युद्ध के पश्चात चौथी वहिनी का उद्भव हुआ। 1965 सर क्रीक युद्ध में बेरी कर्नल बुरी की कमांड में जौहर दिखाया यह वही वाहिनी है जिसने सर्जिकल स्ट्राइक से भारत माता का गौरव बढ़ाया जो अद्वितीय है और हमारे नौजवानों में देश भक्ति का जोश भरता रहेगा। जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है मुरदा दिल क्या खाक जिया करते हैं। ❖**मेजर रामनाथ शर्मा, हमीरपुर**

पाठकों के सुझाव व सन्देश हेतु सम्पर्क सूत्र:
0177-2836990

स्मरणीय दिवस (जनवरी)

श्री गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती	*05 जनवरी*
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	*12 जनवरी*
लोहड़ी	*13 जनवरी*
मकर संक्रांति	*14 जनवरी*
थल सेना दिवस	*15 जनवरी*
गुरू नानक जयंती	*18 जनवरी*
हिमाचल पूर्ण राज्यत्व दिसस	*25 जनवरी*
गणतन्त्र दिवस	*26 जनवरी*
लाला लाजपत राय जयन्ती	*28 जनवरी*

पारम्परिक जीवन पद्धति को सुदृढ़ बनाएँ

भारतीय संस्कृति अमूल्य धरोहर को समेटे हुए संपूर्ण विश्व में अपनी एक पृथक पहचान रखती है। उसकी विशिष्टता का एक मुख्य कारक तत्व पारिवारिक जीवन पद्धति अथवा परिवार संस्था है। वैदिक काल से ही परिवार संस्था कुल-गोत्र एवं वर्ण व्यवस्था से परिपुष्ट होती हुई उतरोत्तर सुदृढ़ता को प्राप्त होती रही। उत्तरकाल में भारत के गुलामी की जंजीरों में जकड़े जाने पर यह संस्था अवश्य अव्यवस्थित हुई। अन्य विदेशी संस्कृतियों के समावेश एवं प्रभाव से इसमें कई कुरीतियाँ एवं कमजोरियाँ उत्पन्न हुई। उदाहरणत: वैदिक काल में जहाँ वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत कोई जातिगत भेदभाव नहीं था, कुल गोत्र केवल जन्म एवं स्वाभिमान के परिचायक थे, वहाँ बाद में वर्णव्यवस्था में जातिगत भेदभाव बढ़ने लगा, कुलगोत्र अहंकार के परिचायक बनने लगे। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतना बढ़ने लगा, व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति में अपनों की चिंता दूर होने लगी और आज स्थिति यह है कि स्वतन्त्र होते हुए भी हम मानसिक रूप से विदेशी संस्कृति के गुलाम होते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार कम होते जा रहे हैं, फलस्वरूप एकल परिवारों में उतरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। इसका सीधा एवं सर्वाधिक दुष्प्रभाव माता-पिता एवं वृद्धजनों पर पड़ रहा है। 'मातृदेवो भव: पितृदेवो भव:' के सार्थक चिंतन पर आज के भौतिक युग की काली छाया मंडरा रही है। पारिवारिक संस्कार छूटते जा रहे हैं, अतएव माता-पिता एवं वृद्धजन उपेक्षा के शिकार बनते जा रहे हैं। पाश्चात्य देशों में वृद्धाश्रमों की परिकल्पना पर जहाँ हम आश्चर्य चकित होते थे आज भारत में उनकी उतनी ही आवश्यकता प्रतीत हो रही है। रिश्ते-नाते सिमटते जा रहे हैं। वह परिवार जो दादा-दादी, माता-पिता, चाचा, ताया, बेटा-बेटी, भतीजा, भतीजी, बहिन-भाई, के रिश्तों से बंधा रहता था और जिस पर रिश्तों जैसे नाना-नानी, फफा-फफी, मामा-मामी तथा अन्यान्य रिश्तों की स्नेह छाया बनी रहती थी वही आज केवल एकल परिवार अर्थात् में मेरी पत्नी और मेरे बच्चे में सिमटता जा रहा है।

भारत के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सामाजिकता बनी हुई है। नाते रिश्तों में मिठास है। संयुक्त-परिवारों की भी पर्याप्त संख्या है किन्तु शनै-शनै यहाँ की दशा-दिशा भी बदलती जा रही है। आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग अपने बच्चों की शिक्षा एवं परवरिश हेतु शहर में अपना बसेरा बना रहे हैं। दूसरी ओर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग भी आजीविका हेतु शहर की ओर भाग रहा है। गाँव खाली होते जा रहे हैं। कृषि कार्य में रूचि और क्षमता घटती जा रही है। कृषि एवं बागवानी प्रवासी मजदूरों के भरोसे पर टिकी है। वृद्ध एवं अशक्त बुजुर्ग लोग ही घर की चौकीदारी कर रहे हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त युवा तो ग्रामीण संस्कृति से पहले ही किनारा कर बैठे हैं। फिर भी सन्तोष की बात है कि कुछ ऐसे पढ़े लिखे युवा ऊँचे पदों पर नौकरी कर रहे थे, नौकरी छोड़कर अपने गाँव लौट आऐ हैं। नई तकनीक अपनाते हुए कृषि एवं बागवानी में एक आदर्श स्थापित किया है और अपने वृद्ध माता-पिता की लाठी का सहारा बने हैं।

वर्तमान की परिस्थितियों का आंकलन करते हुए हमें यह स्वीकार करना होगा कि संयुक्त परिवार की व्यवस्था व्यवहारिक रूप में कठिन लगती हो किन्तु वैचारिक रूप से उसको बनाए रखा जा सकता है। भाई-भाई और बहिनें भले ही पृथक-पृथक रहते हैं अथवा अपना जीवन निर्वहन कर रहे हों फिर भी माता-पिता उनके केन्द्र बिन्दु बने रहने चाहिए। सुख-दु:ख में तो वे एक स्थान पर अवश्य ही एकत्रित होते हैं किन्तु अन्य त्यौहार आदि भी उन्हें मिलकर मनाने चाहिए। सप्ताह में नहीं तो मासिक मिलन तो अवश्य होना ही चाहिए। परस्पर स्नेह एवं सौहार्द बनाए रखने का यह एक उत्तम उपाय है। अपनी सन्तानों को इसी प्रकार अच्छे संस्कार दिये जा सकते हैं। यदि हम अपनी सन्तानों को संस्कारित नहीं कर पाये तो यह समझ लीजिए कि जितने समय तक हम अपने माता-पिता से विमुख होंगे, उससे कहीं पहले आपकी सन्तानें आपसे मुँह मोड़ लेंगी। इसलिए हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम अपनी संस्कृति का सम्मान करते हुए और उससे प्रेरणा लेते हुए अपनी पारम्परिक पारिवारिक जीवन-पद्धति को सुदृढ़ बनाएँ। परिवार में यदि एकता और सौहार्दता रहेगी तो समाज में भी वही गुण परिलक्षित होंगे। समाज में सौहार्दता और एकता होगी तो सम्पूर्ण राष्ट्र एक होकर गौरव को प्राप्त करेगा।

पितृदेवो भवः

हमारी सर्वोत्तम विरासत हमारी संस्कृति, रहन-सहन, आचार-विचार, सद्व्यवहार और सदाचार है। भीष्म पितामह, श्रवणकुमार और अन्य कई पितृभक्ति के अन्यतम उदाहरण हमारे राष्ट्र में मिलते हैं। यही कारण है कि ''हस्ती मिटती नहीं हमारी''। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की पितृभक्ति अद्वितीय है।

जनपद के समलाना के हिमाचल के हमीरपुर में हमारे निवास के पास ही पटयाल नामक युवक नोला बात सन् 1993 की है। नाई की दुकान चलाते थे। पटयाल को अमरीका जाने निपुण, ईमानदार, सदाचारी ने समुद्री जहाज में जाने की का वीजा मिल गया। किसी के बदले में उन्हें जहाज में व्यवस्था करा दी। क्षौरकिया सुअवसर प्राप्त हो गया। मुफ्त यात्रा करने का पिता मूत्रबंद से उत्पीड़ित हो दुर्भाग्यवश गांव में उनके विशेषज्ञ नहीं थे। मेरे गए। तब हिमाचल में सक्सेना (एफआरसीएस, जानकार सुप्रसिद्ध डॉक्टर में ही अपना चिकित्सालय इंग्लैंड और अमरीका) नौल पिता जी को रातों रात लाया चलाते थे। सम्पर्क हुआ, हुआ, जान बंध गई। सुपुत्र पटियाल ने विदेश न जाने का संकल्प लिया। वाह रे! भारत माता के लाल की पितृभक्ति! पूर्णतया गया, अगले दिन ऑपरेशन डॉक्टर को जब यह सब ज्ञात हुआ तो उन्होंने सारे उपचार को निःशुल्क कर दिया। ❖

प्रेरक प्रसंग

एक दुर्घटना में एक व्यक्ति के परिवार के सभी सदस्य काल के ग्रास में समा गए। वह स्वयं अनेक दिनों तक चिकित्सकों की देखरेख में रहा। एक वृद्ध व्यक्ति ईश्वर की दया के रूप में उसे मिला। वृद्ध व्यक्ति को उसने अपना दुख खूब बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया। वृद्ध सुनकर हंसने लगा। इस पर वह हक्का-बक्का-सा उसे देखने लगा। वृद्ध उसे अपनी कुटिया में ले आया और खाने को थोड़े-से भीगे चने दिए। उसने अंकुरित चना खाकर, लोटाभर जल पीने के बाद कुछ तृप्त होकर पूछा-'बाबा! मेरे दुख को सुनकर आप क्यों हंसे?' हंसने की बात पर कौन नहीं हंसेगा?' समझाते हुए बूढ़े ने कहा- 'दुख में सुख का अनुभव जब करने लगोगे तब तुम भी हंसोगे?' कुछ कदम चलकर जब व्यक्ति ने मुड़कर देखा तो उसे अत्यंत आश्चर्य हुआ और उसकी आंखे खुली की खुली रह गईं। वृद्ध ने झोपड़ी गिरा दी, दूर खड़ा ठहाका लगाकर हंस रहा था और कह रहा था कि अब कहीं और झोपड़ी लगानी है, जहां सेवा चाहिए। फिर उसने देखा तेज कदमों से वृद्ध एक ओर चल पड़ा तथा आंखों से ओझल हो गया। संतुलित होने पर वह व्यक्ति अपने निवास की ओर चल पड़ा। भटके मन को जैसे राह मिल गई। वह सेवा कार्य में रमा तो वही उसके जीवन का लक्ष्य हो गया। ❖

❖

बहुमूल्य जीवन का उपहार व्यर्थ के दिखावे से श्रेष्ठ नहीं बनता

-प्रदीप कुमार सिंह पाल

इस संसार में हर व्यक्ति के अंदर स्वयं को अधिक श्रेष्ठ, अधिक सुंदर, कुछ विशेष, सबसे हटकर प्रदर्शित करने का एक गुण छिपा हुआ है। इसे महत्वपूर्ण दिखने का शौक भी कह सकते हैं। इस कारण हर व्यक्ति इसी कोशिश में लगा रहता है कि कैसे वह सबकी नजरों में ऊपर चढ़ जाए। दूसरों की नजरों में अच्छा दिखने के लिए, अपनी छवि बनाने के लिए यदि व्यक्ति को अनैतिक कार्य भी करना पड़ता है, तो वह उसे करने से नहीं कतराता। इस तरह के किए गए अनैतिक कार्यों से वह अपने भविष्य के धरातल पर कांटे बोता रहता है, लेकिन उसे यह पता ही नहीं होता कि वह क्या कर रहा है और इसका परिणाम कालांतर में उसके लिए दु:खमयी होगा।

यह सच है कि दुनिया में कुछ लोग दिखावा अधिक करते हैं। वह सोचता है कि यहां हर चीज दिखावट की वस्तु है। जो अपने को जितना सुंदर दिखाता है, वह उतना ही श्रेष्ठ कहा जाता है, लेकिन वास्तविकता कुछ भिन्न है। भिन्नता यह है कि जो भी वस्तु या चीज बाहर से जितनी सुंदर दिखाई जाती है या दिखती है, क्या वह अंदर से भी उतनी ही सुंदर है? यदि है तो इससे सर्वोत्तम कुछ भी नहीं और यदि नहीं है तो यह केवल एक प्रकार का आडम्बर मात्र है। जो हमारी अंतश्चेतना पर एक ऐसा आवरण चढ़ा देता है, जिसके नीचे हमारी मौलिकता छिप जाती है और इसे हटाने के लिए हमें कठिन मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि यह एक ऐसा परदा होता है जिसे हमने स्वयं ओढ़ा है, खुद को स्वयं से दूर किया है। यह एक ऐसा अंधेरा होता है, जिसे हमने स्वयं आमंत्रित किया है, भले ही हम उसे उस समय नहीं समझ पाते और उसके दुष्परिणाम को नहीं जान पाते।

हमको किसी से किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता नहीं है, आप स्वयं जैसे हैं बिल्कुल सही हैं। बस हम खुद को स्वीकार करना सीखें। 'स्वयं के साथ प्रतिस्पर्धा' करके सर्वोच्च शिखर की ओर आगे बढ़ें। असली सवाल यह है कि भीतर हम क्या हैं? अगर भीतर गलत है, तो हम जो भी करेंगे, उससे गलत फलित होगा। अगर हम भीतर सही हों, तो हम जो भी करेंगे, वह सही फलित होगा। सारी शिक्षा व्यर्थ है, सारे उपदेश व्यर्थ हैं, अगर वे हमें अपने भीतर डूबने की कला नहीं सिखाते। जिंदगी को अगर हमें जाग्रत बनाना है, तो बहुत सी जाग्रत समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। लेकिन होनी चाहिए और अगर हमें जिंदगी को जाग्रतरहित बनाना है, तो हो सकता है हम सारी समस्याओं को खत्म कर दें, लेकिन तब व्यक्ति घुट-घुटकर जीता है।

लोकहित का मार्ग अहंकार, बुद्धि व तर्क के विपरीत है। हालांकि लोक सेवा बड़ी सुगम है, लेकिन जिनकी आंखों में आसू हों, बस उनके लिए। लोक सेवा बहुत कठिन है, अगर आंखों में आंसू सूख गए हों। इस संसार में बहुतेरे ऐसे हैं, जिनकी आंखों के आंसू सूख गए हैं, जिनके पास आंखें हैं, लेकिन आंखों में पानी नहीं रहा, जो देखते हैं, लेकिन गहरा नहीं देख पाते क्योंकि आंखों से भी ज्यादा गहरा आंखों के आंसू देखते हैं और जिनकी आंखों में आंसू नहीं रहे, उनकी आंखों के स्वच्छ होने की संभावना मिट गई। आंसू तो स्नान करा जाते हैं, आंखों को बार-बार ताजा करते हैं, धूल को जमने नहीं देते, तर्क को टिकने नहीं देते, प्रतिभा का स्वत: परिष्कार कर देते हैं। व्यक्तित्व के कूड़ा-करकट को बहा ले जाते हैं। आँखें फिर ताजी हो जाती हैं, छोटे बच्चों की भांति, फिर संसार हर-भरा ताजा व नया हो जाता है। भावनाओं की ताजगी में लोकहित की सुगन्ध मिलती है। अहंकार से लोक हित बिल्कुल विपरीत है। इसलिए जो अहंकार की खोज पर चले हैं, वे लोक सेवा की पुनीत भावना को न पा सकेंगे। लोक सेवा को पाना है तो स्वयं को खोना ही पड़ेगा। ❖

कुटुंब, राष्ट्रीयता व सामाजिक मर्यादाएं

- विनोद बंसल

किसी भी देश या समाज की उन्नति उसके नागरिकों की सोच व व्यवहार पर निर्भर करती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में परिवार या कुटुंब का महत्व सदा से ही रहा है। सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज तक जितने भी महापुरूष या दिव्यात्माएं इस पुण्य भूमि पर जन्मीं वे किसी न किसी कुल या कुटुंब की मर्यादा से बंधकर या उनके संस्कार ग्रहण कर ही समाज का निर्देशन कर सकीं और हजारों-लाखों वर्षों के उपरांत भी आज तक विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम हुईं। त्रेता युग में इक्ष्वाकु वंश में जन्मे बालक श्रीराम अपने कुल की विविध मर्यादाओं का पालन करते हुए ही तो मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाकर समस्त सृष्टि में भगवान का दर्जा पा गए। ''रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाए पर वचन न जाई'', आखिर रघुकुल वंश के लिए ही तो प्रसिद्ध है।

जिसपर चलकर जीवन के असंख्य कष्टों को भी नजरंदाज कर श्रीराम चौदह वर्ष तक अर्धांगिनी माता सीता के साथ घोर घने जंगलों में रहे। सम्पूर्ण जीवन में अनेक बाधाओं से लड़ते हुए वे अपने कर्तव्य पथ से कभी विचलित नहीं हुए। बल्कि वनवास जैसे कठिनतम समय का प्रयोग उन्होंने बड़े ही नियोजित ढंग से किया। एक ओर उन्होंने केवट, शबरी, अहिल्या व जटायु जैसे समाज के अति पिछड़े लोगों को गले लगाकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ा वहीं दूसरी और सुग्रीव, हनुमान और अंगद जैसे योद्धाओं को उनकी शक्ति का परिचय दिलाकर चहुं और व्याप्त आसुरी शक्तियों के विरूद्ध लड़ने का साहस उनमें विकसित किया। उस काल में श्रीराम के स्थान पर हम यदि होते तो उस अभावग्रस्त अवस्था में भी स्वाभिमान पूर्वक दुनिया की सबसे बड़ी साधन संपन्न दुनिया की मायावी आसुरी शक्ति रावण पर विजय पाने की कल्पना भर करना भी हमारे लिए संभव नहीं था। किन्तु अपने कुल यानी कुटुंब के संस्कार और राष्ट्र जागरण की दृढ़ इच्छा शक्ति ने ही शायद भगवान राम को उस काल के शक्तिमान रावण को ललकारने की प्रेरणा दी। याद रखना चाहिए कि साधन संपन्न रावण रथ पर था। जबकि श्रीराम पैदल ही युद्ध कर रहे थे। देवताओं ने भी अपना विमान तब तक युद्ध भूमि में नहीं भेजा जब तक कि उन्होंने यानि श्रीराम की अजेय शक्ति का विश्वास होने पर ही देवताओं ने उन्हें सहयोग की पेशकश की।

द्वापर युग में कुरूवंश की लड़ाई ने समाज के लिए जो मर्यादाएं तय कीं या धर्म और अधर्म का जो भेद स्पष्ट किया वह एक ही कुटुंब में दो प्रकार की विपरीत सोच का ही तो परिणम था। यदि कलियुग में देखें तो चीन के हान वंश से लेकर सऊदी कुरेश कबीले तक और ब्रिटिश 'किंगडम' से लेकर इराक के सद्दाम परिवार तक, अनेक गैर भारतीय परिवारों में कुटुम्ब कलह के कारण ही सत्ता परिवर्तन भी हुए। कुछ लोग हैं जिन्हें अपने पड़ोसियों का

लहू देखे बिना चैन नहीं मिलता, किसी की जान लिए बिना रोटी गले से नहीं उतरती। किन्तु इतिहास साक्षी है कि भारत ने हमेशा बचाव में ही हथियार उठाए हैं। चाणक्य, समर्थ गुरू रामदास, माता जीजाबाई चन्द्रगुप्त मौर्य और वीर शिवाजी जैसे महापुरूषों के संस्कार ही तो हैं जो हमारे अंदर नित नई प्रेरणा व ऊर्जा का संचार करते हैं। सामाजिक मर्यादाएं जब तार-तार होने लगती हैं तब राष्ट्रीय मूल्यों का भी ह्रास होने लगता है। एक कुटुंब के लोग विविध विचारों के तो हो सकते हैं। किन्तु उस कुटुंब की एकता अखण्डता और विकास हेतु आवश्यक है कि उसे एकजुट रखने वाले तत्व कभी कमजोर न पड़ें। अर्थात् एक दूसरे के प्रति प्रेम, दया, समर्पण के साथ एकत्व या एकरूपता के भाव का होना नितांत आवश्यक है। जिस प्रकार एक कुटुंब में संस्कारवान लोग एकत्व का भाव लेकर बुजुर्गों का सम्मान करते हुए रहते हैं उसी प्रकार किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए उन्नत कुटुंब व्यवस्था, संस्कारवान, कर्मठ तथा राष्ट्रीय मूल्यों से ओत-प्रेत नागरिक नितांत आवश्यक हैं। किसी भी राष्ट्र के चहुंमुखी विकास के लिए आवश्यक है कि उसके नागरिक राष्ट्रीयता की भावना से किसी प्रकार का समझौता न कर सकें, बात बात पर कभी वन्दे मातरम् का, कभी भारत माता की जय का, तो कभी राष्ट्रगान जन-गण-मन का विरोध करने वाली विचारधारा ही तो राष्ट्र को कमजोर करने का षड्यंत्र रचती रहती है।

देखने में आ रहा है कि जैसे-जैसे संयुक्त परिवार यानी कुटुंब व्यवस्था टूट रही है लोगों में संस्कार हीनता पनप रही है। बात-बात पर लोग धैर्य खो बैठते हैं। जिन परिवारों में सामान्य रूप से कभी 8-10 बच्चे होते थे आज एक या दो ही मुश्किल से हो पा रहे हैं। परिणामत: बच्चों को न बहन का ज्ञान, न भाई का, न चाचा का, न चाची का, न बुआ का, न फूफा का, न ताऊ का, न साली का, न भाभी का। जब नई पीढ़ी इन रिश्तों को समझेगी ही नहीं सम्मान कैसे जानेगी और आपसी प्रेम भाव कैसे बढ़ेगा। जब प्रेम व एक दूसरे के प्रति समर्पण नहीं तो राष्ट्रीय भावना कैसे बलवती होगी। जब बच्चा ही एक या दो होंगे तो सेना में कौन जाएगा, धर्म प्रचार कौन करेगा परिवार की आजीविका कौन चलाएगा, बहिनों को जिहादी दुष्टों से कौन बचाएगा और रिश्तों की बागडोर कौन सम्भालेगा। अर्थात् राष्ट्र की मजबूती तथा विकास के लिए आदर्श कुटुंब व्यवस्था व सामाजिक मर्यादाओं की अहम् भूमिका होती है। ❖ **लेखक विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं।**

परिवार में वृद्धजनों के प्रति कर्तव्य-

वृद्धजनों के पास अनुभव का खजाना होता है। जहाँ बालकों के कन्धों पर भविष्य का भार आने वाला होता है, वहीं वृद्धजनों के पास अतीन का पूरा लेखा-जोखा, जीवन के हर पहलू का ज्ञान होता है। परिवार में ऐसे अनुभव की आवश्यकता होती है। आवश्यकता इस बात की है कि उस अनुभव के खजाने का लाभ कैसे लिया जाये(उससे अनेक समस्याओं का निदान घर बैठे पाया जा सकता है। ऐसे अनुभव का लाभ एवं जीवन जीने की कला सीखने के लिये आवश्यक है कि वृद्धजन स्वस्थ रहें, सुन्दर रहें। वृद्धों को घर में ऐसी जगह रखा जाना चाहिये, जहाँ से उनकी नजर पूरे घर पर हो और सबकी नजर उन पर हो। स्वच्छ आवास, हवा-पानी, प्रकाश एवं नजदीक ही शौचालय की व्यवस्था उनके लिये होनी चाहिये।

वृद्धावस्था का सबसे बड़ा दुश्मन एकान्त होता है। परिवार के बच्चे, बड़े, जवान-सभी को समय निकालकर वृद्धों के पास बैठना चाहिये। घर के छोटे-बड़े निर्णय में उनकी हिस्सेदारी निश्चित करनी चाहिये ताकि उन्हें उनके स्वयं के महत्व की जानकारी रहे। जहाँ तक हो, समय-2 पर उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेते रहें। साथ ही मानसिक स्थिति का भी जायजा लेते रहना चाहिये। उनसे अनावश्यक वाद-विवाद, तर्क-वितर्क नहीं करना चाहिये। उनके लिये पौष्टिक एवं सुपाच्य आहार की व्यवस्था करनी चाहिये। समय-2 पर विटामिन, आयरन, प्रोटीनयुक्त औषधि देते रहना चाहिये। उन्हें पीने के लिये दूध अवश्य प्रदान करना चाहिये। ❖

'पारिवारिक एकता' का विकसित स्वरूप - संयुक्त परिवार

- डॉ. जगदीश गांधी

पारिवारिक एकता को दूसरे महत्वपूर्ण विषयों से अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए। किसी भी कार्य में परिवार के प्रत्येक सदस्य की सलाह लेकर पूरी तरह से विचार-विमर्श करके पूर्ण संतुलन और जागरूकता को बढ़ावा देना चाहिए। ऐसा करने से पारिवारिक झगड़ों को रोका जा सकता है। ध्यान दें, उस परिवार को हर कार्य में सफलता कितनी आसानी से प्राप्त होती है जिसमें एकता है। उस घर को सब खुशियाँ प्राप्त होती हैं। उस परिवार के सदस्य तेजी से उन्नति प्राप्त करते हुये संसार में समृद्धि प्राप्त करते हैं। उनके कार्य सुव्यवस्थित होते हैं। उन्हें सुख और कीर्ति प्राप्त होती है। वे रक्षित होते हैं, आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं। दूसरे लोगों को इनसे सहानुभूति होती है। ऐसे परिवार दिन प्रतिदिन अपना मान-सम्मान बढ़ाते हैं। यदि एक परिवार में प्रेम और समझौता होता है तो वह परिवार विकसित, प्रकाशित और आध्यात्मिक गुणों से युक्त होता है। शत्रुता केवल नफरत, विनाश तथा अलगाव ही पैदा करती है।

सभी गुण परिवार में सिखाये जायें-

ईश्वरीय शिक्षा के अन्तर्गत, परिवार, जो कि मनुष्यों का संगठन है, को पवित्र नियम सिखाये जाने चाहिए। सभी परिवारिक एकता को हमेशा महत्व दिया जाय तथा किसी के व्यक्तिगत अधिकारों की उपेक्षा न हो। किसी को भी किसी बात के लिये बाध्य न किया जाये। एक दूसरे का दु:ख सभी का दु:ख हो, एक दूसरे का दर्द सभी का दर्द हो, एक दूसरे का सुख सभी का सुख हो और एक दूसरे का सम्मान सभी का सम्मान हो। ईश्वर से प्रार्थना करें कि ईश्वर कृपालु होकर हमारे घर को दैवी पथ-प्रदर्शन का केन्द्र बनाये जिससे हम सम्पूर्ण मानव जाति के हृदय में प्रेम और सद्भावना रूपी दीपक जला सकें। जिस घर में ईश्वर का भजन किया जाता है, वही घर स्वर्ग व ईश्वर के घर का हरा भरा बगीचा है।

ईश्वर ने माता-पिता को एक आत्मा के रूप में बनाया है-

विधाता ने स्त्री और पुरूष को एक दूसरे के साथ रहने के लिए इतने अधिक नजदीक सम्बन्धों को बनाया है कि वे दोनों एक आत्मा ही होते हैं। वे दोनों एक-दूसरे के सहायक तथा नजदीकी मित्र होते हैं। दोनों को एक दूसरे के कल्याण का ध्यान होता है। ऐसा करने से उन्हें संतोष और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। लेकिन ऐसा न करने से उनका जीवन कड़वाहट से भर जाता है। ऐसी स्थिति में वे अपयश पाते हैं।

घर में तरीका और सुव्यवस्था हो-

घर को ऊँचा उठाना एक व्यक्ति के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। व्यक्ति जब तक युवावस्था में होता है, वह यौवनकाल में आत्म केन्द्रित होता है, वह अपने कर्तव्यों को नहीं समझ पाता लेकिन बाद में वह पछताता है। घर तरीके से सुव्यवस्थित होना चाहिए। उनके विचार सूर्यरूपी सत्य की किरणों से युक्त तथा स्वर्ग के सितारों की तरह प्रकाशमान हों। अपने बच्चों को इस तरह से शिक्षित

करें कि जिससे परिवार की यश और कीर्ति में निरन्तर वृद्धि हो।

पारिवारिक संगठन में अनगिनत फायदे हैं-

मेरा घर शान्ति का घर है। मेरा घर खुशियों से पूर्ण तथा आनन्दमय है। मेरा घर हँसी और प्रसन्नता का घर है। जो कोई भी इस घर में प्रवेश करता है अवश्य ही प्रसन्नचित्त होकर बाहर निकलता है। मेरा घर प्रकाश का घर है, जो कोई भी इसमें प्रवेश करता है, इससे प्रकाशित हो जाता है। पारिवारिक बुराइयों को दूर करने में सचेत रहें। वे बुराइयाँ पतन की ओर ले जा सकती हैं, उन अच्छाइयों और वरदानों को जो उस परिवार को प्राप्त हैं तथा उन्हीं पर परिवार का संगठन टिका हुआ है। हम अपने परिवार को ईश्वर की राह पर ऊँचा उठाने का प्रयास करें। ईश्वर से अनगिनत लाभ और आशीर्वाद उस परिवार को प्राप्त होंगे।

वह घर धन्य है जहाँ ईश्वर का स्मरण होता है-

यद्यपि परिवार के बन्धन गहरे माने जाते हैं फिर आध्यात्मिक बंधन उससे भी अधिक गहरे होते हैं। वे निरन्तर मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं जबकि शारीरिक बंधन जब तक आध्यात्मिक बंधन से जुड़े न हो तो ये केवल इस जीवन तक ही सीमित रह जाते हैं। धन्य है वह स्थान, वह घर, वह शहर, वह पर्वत, वह आश्रयस्थल, वह गुफा, वह खाड़ी, वह धरती, वह सागर, वह द्वीप जहाँ ईश्वर का नाम लिया जाता है और ईश्वर का गुणगान होता है। उस घर को ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त है जिस घर में ईश्वर का स्मरण किया जाता है। जहाँ पर ईश्वर के भक्तों का आगमन होता है, जहाँ ईश्वर का गुणगान होता है, वहाँ के लोगों पर ईश्वर की पूर्ण कृपादृष्टि रहती है। ईश्वर भक्ति के कारण वे आदर प्राप्त करते हैं। सच तो यह है कि वे ईश्वर के प्रशंसनीय सेवक हैं।

अगर कहीं ऐसा घर पाया जाता है तो उस नगर और देश को बहुत लाभ पहुँचता है। ईश्वरीय ज्ञान के लिये प्रोत्साहन मिलता है। वह परिवार अपने अत्यधिक आध्यात्मिकता और प्रेम के लिये जनप्रिय हो जाता है। परिवार का वातावरण ईश्वरीय गुणों से युक्त हो अर्थात् परिवार में ईश्वर का स्मरण किया जाता हो। बलपूर्वक किसी पर कुछ थोपा न जाये बल्कि विनम्रतापूर्वक प्यार से सुझाव के तौर पर समझाया जाए।

अपने बच्चों को धैर्यपूर्वक प्रशिक्षित करें-

एक बालक शुद्ध, दयालु एवं ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित पवित्र आत्मा लेकर जन्म लेता है। माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण करते समय हर सम्भव प्रयास करें कि उनके बच्चे आध्यात्मिक गुणों से सुसज्जित हों। अगर ऐसा नहीं होगा तो बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं करेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि वे ईश्वर का आदर नहीं करेंगे। वास्तव में ऐसे बच्चे किसी को भी कोई महत्व नहीं देते और वे वही कुछ करते हैं जो वे चाहते हैं। बच्चों को इस बात के लिये परेशान नहीं करना चाहिए कि उसका विकास धीरे-धीरे हो रहा है। बल्कि उसे धैर्यपूर्वक पूर्णरूप से प्रशिक्षित करना चाहिए। जन समूह में उसे रोके टोके नहीं। उसका आत्मबल बढ़ायें। धैर्यपूर्वक उन्हें अच्छे गुणों की ओर अग्रसर करें।

आइये, अपने परिवार को ईश्वरीय परिवार बनायें-

यदि हम अपने परिवार से प्यार करते हैं, अपने देश के निवासियों से प्यार करते हैं तो इस प्यार की किरण को बढ़ने देना चाहिए। सारे संसार में जहाँ कही भी हमें गुण-धर्म दिखायी दे उस व्यक्ति तथा स्थान से बिना किसी भेदभाव के स्नेह करना चाहिए चाहे वह हमारे परिवार का सदस्य हो अथवा नहीं। हमें हर पल अपने घर को ईश्वर का निवास स्थल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

❖लेखक प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं सिटी मोन्टेसरी स्कूल लखनऊ के संस्थापक-प्रबन्धक हैं।

विहिप ने प्रदेश सरकार और खुफिया तंत्र की विफलता पर केंद्रीय गृह मंत्रालय को सौंपा ज्ञापन

विश्व हिंदु परिषद् ने देवभूमि में बढ़ती अवैध आतंकी घुसपैठ में सरकार और प्रादेशिक खुफिया तंत्र की विफलता पर पूरे प्रदेश में जिला उपायुक्तों के माध्यम से केंद्रीय गृह मंत्रालय को ज्ञापन सौंपे। इस बारे में जानकारी देते हुए, विश्व हिंदु परिषद् के प्रांत अध्यक्ष अमनपुरी ने बताया कि प्रदेश पिछले काफी समय से देशविरोधी आतंकियों की शरणस्थली बना हुआ है। उन्होंने कुल्लू के बंजार की घटना का जिक्र करते हुए, कहा कि आईएसआईएस एजेंट आबिद खान चर्च में पादरी के वेश में पॉल नाम से कई महीनों से रह रहा था। उसके द्वारा काफी समय से यहां पर गतिविधियां चलाई जा रही थीं जिसकी सरकार एवं उसके खुफिया तंत्र को कोई जानकारी नहीं थी। इस अवसर पर बजरंग दल के प्रांत संयोजक राजेश शर्मा, प्रांत गौ-संवर्धन एवं संरक्षण बोर्ड के संयोजक रामऋषि भारद्वाज तथा विहिप के अनेक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। वहीं रोहड़ू, रामपुर, शिमला, सोलन, नालागढ़, पांवटा साहिब, नाहन, परवाणु, मंडी, जोगेन्द्रनगर एवं कुल्लु में जिला उपायुक्तों एवं उपमंडल दंडाधिकारियों के माध्यम से केंद्रीय गृह मंत्रालय को ज्ञापन प्रेषित किये गये। ❖

विहिप व सेवा भारती द्वारा चम्बा में कपड़े व राशन वितरित

चम्बा विहिप व सेवा भारती द्वारा चम्बा के अठलूई पचांयत के गुणु गाँव में हुए अग्नि काँड में पीडित परिवारों को सहायता प्रदान की गई जिसमें गर्म कम्बल चद्दरें बर्तन गर्म कपडे राशन आदि वितरित किया गया। ❖

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में इतिहास विषय पर संगोष्ठी आयोजित

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति एवं ठाकुर जगदेव चंद्र स्मृति शोध संस्थान, नेरी हमीरपुर के तत्वाधान में इतिहास विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ मे लेखक प्रमुख डॉ0 ओ0पी0 शर्मा ने कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला पश्चात् ठाकुर जगदेव चंद्र शोध संस्थान नेरी के निदेशक चेतराम गर्ग ने अपने देश के त्याग, शौर्य, पराक्रम और समृद्धि के इतिहास के पुनर्लेखन के विषय में संस्थान की भूमिका का विस्तृत वृत्तांत प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में डॉ. सुरेश सोनी ने युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायी जीवन के विषय में अपना शोध पत्र पढ़ा। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के भारतीय संस्कृति के विश्व में योगदान के विषय में अभूतपूर्व व प्रेरणादायी संस्मरण प्रस्तुत किए। गुलामी के काल में भी संपूर्ण विश्व जगत में अपने देश, धर्म व संस्कृति का विचार रखने वाले वे पहले भारतीय थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भौतिकी के प्राध्यापक डॉ. वीर सिंह रांगड़ा ने की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता घुमारवीं महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं इतिहास संकलन समिति हि.प्र. के सचिव डा. सुरेश सोनी एवं प्रांत प्रचारक संजीवन कुमार तथा प्रदेश विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, गैर शैक्षिक कर्मचारी तथा शोध छात्र विशेष रूप से उपस्थित रहे। ❖

स्वदेशी जागरण मंच का बाबू गेनू के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि समारोह

बाबू गेनू के बलिदान दिवस के अवसर पर परवाणू, जिला सोलन मे श्रद्धान्जलि समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठक श्री कश्मीरी लाल मुख्यवक्ता रहे। श्री कश्मीरी लाल ने कहा की देशभक्ति किसी गरीब या अमीर के घर जन्म नहीं लेती बल्कि प्रेरणा व व्यावहार से देशभक्ति की भावना जागृत होती इसी से प्रेरित होकर बाबू गेनू ने उस महायज्ञ में भाग लिया और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके आन्दोलन का प्रारभ किया। सन 1930 में बाबू गेनू ने मुंबई में अंग्रेजों द्वारा निर्मित व इंग्लैंड से आयातित वस्तुओं का बहिष्कार हेतु आन्दोलन का एलान कर दिया और अपने सैकड़ों साथियों के साथ मिलकर अंग्रेजों द्वारा आयातित वस्तुओं का मुम्बई शहर में प्रवेश रोकने के लिए जुलूस व धरना प्रदर्शन कर शहीद हो गए परंतु जन-जन में स्वदेशी स्वराज का अलख जगा गए। इस अवसर पर स्वदेशी जागरण मंच प्रांत सह-संयोजक श्री ललित कौशल, विभाग संयोजक श्री ओम प्रकाश गुप्ता, जिला संयोजक श्री ओंकार सिंह जसवाल, जिला प्रचार प्रमुख श्री प्रदीप मल्होत्रा, गीता जसवाल, केतन पटेल सहित 52 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। ❖

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी शाखा शिमला द्वारा गीता जयंती पर कार्यक्रम

विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी शाखा शिमला के द्वारा 10 दिसम्बर को गीता जयंती का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सेवानिवृत्त पोस्टमास्टर जनरल, हि. प्र. श्री तेजराम शर्मा रहे। कार्यक्रम की शरुआत शांति पाठ से हुई। अतिथि स्वागत एवं कार्यक्रम प्रस्तावना श्री हिम्मत सिंह, कार्यालय प्रमुख ने प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम में बच्चों, महिलाओं एवं पुरुष सहित 40 कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में श्री हार्दिक मेहता ने विवेकानन्द केन्द्र कि गतिविधियों, जैसे कि योगवर्ग, संस्कारवर्ग एवं स्वाध्याय वर्ग के बारे में जानकारी दी।कार्यक्रम के सुचारु संचालन में श्री गोपाल, प्रवीण, कुलदीप, शिवम्, धरमेन्द्र एवं हीरा सिंह आदि का विशेष सहयोग रहा।❖

सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय

हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला-171009

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त

(संचालित हिमाचल शिक्षा समिति-सम्बद्ध विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान)

प्रवेश प्रारम्भ

सत्र 2017-18

- कक्षा नर्सरी से नवम् तक और 10+1 (विज्ञान संकाय) कक्षा 6वीं से 12वीं तक छात्रावास सुविधा उपलब्ध (केवल लड़कों के लिए)
- कक्षा 9वीं और 10+1 तथा छात्रावास के लिए प्रवेश परीक्षा 18 फरवरी, 2017 को होगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

प्रधानाचार्य, स.वि.म.व.मा.वि.

हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला-9

दूरभाष: 0177-2622308, मो.: 94180-18527, 94182-76324

अणु डाक: svmhimrashmi@gmail.com

वेब साईट: www.svmhemrashmi.org

ऐसे थे अपने दीनदयाल जी

- सुशील कुमार

यह रोचक व प्रेरक घटना उस समय की है जब अपने देश में टेलीविजन नहीं आया था। लोग समाचार जानने के लिए अखबारों पर निर्भर थे। हां, बड़े-बड़े घरों में रेडियो होता था - उसका आकार भी बड़ा होता था और उसकी आवाज भी बुलन्द होती थी। कुछ बड़े शहरों में समाचार सुनने के लिए उत्सुक लोग किसी ऐसी दुकान या संस्थान का सहारा लेते थे, जहां रेडियो सेट हो। एक बात और, उन दिनों रेडियो रखने और उसका उपयोग करने के लिए लाइसेंस भी लेना पड़ता था। फिर ट्रॉजिस्टर का जमाना आया। यह आकार में एक मोटी पुस्तक जितना मोटा और लम्बाई चौड़ाई में पुस्तक में डयौढ़ा होता था। समय बीतने के साथ ट्रॉजिस्टर का आकर छोटा हुआ- पर उस समय इसको रखना एक मंहगा शौक था। बैट्री की सैल महंगे होते थे- और शुल्क देकर सरकार से लाइसेंस भी लेना पड़ता था। बीच बीच में लाईसेंस का नवीनीकरण भी करवाना पड़ता था, वह भी शुल्क देकर। जिन दिनों की यह घटना हे उन दिनों दीनदयाल जी भारतीय जनसंघ के महामंत्री हुआ करते थे। यह तो हमारे ध्यान में होगा ही कि दीनदयाल जी लगातार 15 वर्ष तक जनसंघ के महामंत्री रहे- 1952 से लेकर 1967 तक।

पार्टी के काम के लिए उन्हें लगातार देश भर में दौरा करना पड़ता था। यहां तक कि पत्र व्यवहार आदि का काम भी वे रेलगाड़ी में ही पूरा करते थे। गम्भीर अध्ययन, मनन-चिन्तन व लेखन उनका स्वभाव था- ऐसे में आवश्यक समाचार जानने के लिए उन्हें भी अपनी यात्रा में ट्रॉजिस्टर साथ रखना पड़ता था। एक दिन वे यात्रा पर थे- शायद इंटर या सैकेंड क्लास में यात्रा कर रहे थे ताकि लिखने पड़ने की सुविधा रहे। (उन दिनों रेलवे में प्रथम, द्वितीय, इंटर और तृतीय इस प्रकार चार श्रेणियां होती थी।) उन्हें ध्यान आया कि समाचारों का समय हो गया है। उन्होंने अपने सहयात्री से निवेदन किया कि वे अपने ट्रॉजिस्टर से उन्हें समाचार सुना दे। दीनदयाल जी सरल तो थे ही, उनका व्यवहार भी बहुत मधुर होता था। अत: यात्री ने प्रसन्नतापूर्वक अपने ट्रॉजिस्टर से दीनदयाल जी को समाचार सुना दिए। यात्रा थोड़ी लम्बी थी- सहयात्री के ध्यान में आया कि ट्रॉजिस्टर तो दीनदयाल जी के पास भी है-पर वे अपना ट्रॉजिस्टर प्रयोग नहीं कर रहे। चालाकी दीनदयाल जी को छू भी नहीं गई थी- फिर यह मामला क्या है? परस्पर निकटता बढ़ने के कारण आखिरकार सहयात्री ने पूछ ही लिया और दीनदयाल जी का उत्तर सुनकर वह चकित ही नहीं हुआ, दीनदयाल जी का भगत भी बन गया। दीनदयाल जी ने बताया कि कल ही उनके ट्रॉजिस्टर के लाइसेंस की अवधि समाप्त हो गई थी, अगले गन्तव्य पर पहुंचकर लाईसेंस का नवीनीकरण करवा लूंगा। सदा सर्वदा छोटे से छोटे नियम के पालन का यह संस्कार उनको राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दैनिक शाखा से प्राप्त हुआ था। वे केवल अन्य लोगों को नियम पालन का उपदेश नहीं देते थे, अपने स्वयं के जीवन में भी उनका कड़ाई से पालन करते थे।

इसीलिए तो एक सामान्य परिवार में अनाथ की भान्ति पलने बढ़ने वाले दीनदयाल जी जन-जन के लोकप्रिय नेता बन सके। यद्यपि वे अजातशत्रु थे, पर उनकी बढ़ती लोकप्रियता से घबड़ाकर 10-11 फरवरी 1968 को रात में विरोधी राजनीतिक विचारधारा के लोगों ने उनकी निर्मम हत्या करवा दी। मृत्यु के समय उनकी आयु केवल 51 वर्ष थी और वे भारतीय जनसंघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष थे। इस घटना से उन सभी को, विशेषकर राजनेताओं को, यह सबक सीखना चाहिए, जो नियम पालन को अपनी शान के खिलाफ समझते हैं और नियम तोड़ने में एक प्रकार की आत्म तुष्टि का अनुभव करते हैं। ❖

अब सिनेमाघरों में बजेगा राष्ट्रगान सभी को खड़ा होना होगा

सुप्रीम कोर्ट ने अपने अहम फैसले में कहा कि देश के सभी सिनेमाघरों में फिल्म शुरू होने से पहले राष्ट्रगान बजाया जाना चाहिए। साथ ही वहां मौजूद लोगों को अपनी जगह पर खड़ा होना होगा। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि इस दौरान 52 सेकेंड वाली राष्ट्रगान की धुन बजाई जाएगी। इस दौरान स्क्रीन पर तिरंगा भी दिखाया जाएगा। फैसले के मुताबिक, राष्ट्रगान बजाया जा रहा है तो वहां मौजूद सभी लोगों को उसका सम्मान करना जरूरी है। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने कहा कि वह इस फैसले के पालन के लिए सभी राज्यों के मुख्य सचिवों तक आदेश की प्रति पहुंचाएगा। सर्वोच्च अदालत ने इस बात पर भी आपत्ति ली कि कहीं-कहीं राष्ट्रगान को कॉमर्शियल एक्टिविटिज में इस्तेमाल किया जा रहा है। श्याम नारायण चौकसे की याचिका पर कोर्ट ने यह फैसला सुनाया है। कोर्ट की ओर से यह भी कहा गया कि ड्रामा क्रिएट करने में राष्ट्रगान का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। ❖

झारखंड में भी होगा गोवंश का अपना पहचान नंबर

झारखंड के धनबाद में 400 देसी गायों की ऑनलाईन टैगिंग कराई गई है। भविष्य में जिले में सभी प्रकार की देसी नस्ल की गायों की टैगिंग कराई जाएगी। आगे चलकर इसे पूरे राज्य में लागू किया जाएगा जिससे गायों का ऑनलाईन रिकॉर्ड रखने में सफलता मिलेगी। टैगिंग में गाय की नस्ल, उससे पैदा हुई बछिया व बछड़ा, उसके मालिक का ब्यौरा आदि रिकॉर्ड उपलब्ध रहेगा। अगर गाय बिक्री होकर दूसरे जिला व राज्य में चली जाती है तो भी टैगिंग नंबर वही रहेगा। टैगिंग नंबर से ही गाय की पहचान होगी। यह विशेष नंबर गायों के कान के पास दर्ज किया जाएगा। यह गोवंश के आधार कार्ड के समान होगा। गाय के नंबर को ऑनलाईन फीड किया जाएगा जिससे उसका रिकॉर्ड कभी भी ऑनलाईन देखा जा सके। सरकार की इस प्रक्रिया का उद्देश्य देसी नस्ल की गायों को संरक्षित करना है। इसके लिए कृत्रिम गर्भाधान व टैगिंग प्रक्रिया अपनाई जा रही है। टैगिंग के आधार पर देसी नस्ल की गाय के दूध में वृद्धि पर काम किया जाएगा। रिसर्च के माध्यम से देसी गाय को विदेशी नस्ल की गाय के समान विकसित किया जाएगा। जिला पशुपालन विभाग पूरे राज्य में गायों को टैगिंग करने की योजना पर काम कर रहा है। ❖

श्री श्री रविशंकर को मिला अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार

आध्यात्मिक गुरू श्री श्री रविशंकर को एक अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार से नवाजा गया। उनको सम्मान विश्व शांति सुनिश्चित करने में प्रयासों के लिए दिया गया है। गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने दिल्ली में विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक को 'डॉ. नागेंद्र सिंह अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार' प्रदान किया। ❖

पहली से आठवीं तक योग जरूरी हो

सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार से कहा है कि वह तीन महीने के भीतर फैसला ले कि वह कक्षा एक से आठ तक के बच्चों के लिए विद्यालयों में योग अनिवार्य करना चाहती है कि नहीं। कोर्ट ने इस टिप्पणी के साथ ही विद्यालयों में योग की शिक्षा अनिवार्य किए जाने संबंधी याचिकाएं निपटा दीं। जेसी सेठ और अश्विनी उपाध्याय ने सुप्रीम कोर्ट में दो जनहित याचिकाएं दाखिल कर मांग की थी कि कक्षा एक से आठवीं तक के पाठ्यक्रम में योग को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए। उपाध्याय ने अपनी याचिका में कहा था कि मानव संसाधन मंत्रालय, एनसीईआरटी, एनसीटीई और सीबीएसई को निर्देश दिए जाएं कि वे एक से लेकर आठवीं तक के छात्रों के लिए योगाभ्यास और स्वास्थ्य शिक्षा की पाठ्य पुस्तकें तैयार करें। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क 2005 कहता है कि योग प्राथमिक शिक्षा का आवश्यक विषय है। इसे अन्य विषयों के साथ बराबरी का दर्जा दिए जाने की आवश्यकता है। ❖

ईसाई मिशनरियां हिंदुओं को गुमराह नहीं कर सकती

विदेशी धन पर ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाया जा रहा धर्मांतरण का दुष्चक्र अब थमता व उल्टा घूमता नज़र आने लगा है, कारण है कि धर्मांतरित हुए हिंदू-सिख परिवारों में अपने धर्म के प्रति जागरूकता बढ़ने लगी है और वे अपने मूल की ओर लौटने को ललायित हैं। इसी का परिणाम है कि दसूहा के गांव छागला के 69 परिवारों के 411 और गांव मांगटा के 25 परिवारों के 137 धर्मांतरित लोगों ने पुन: हिंदू धर्म में वापसी की।

धर्मजागरण विभाग के ज़िला संयोजक के प्रयासों से घर वापस लौटे इन लोगों ने कहा कि वे अपने स्वेच्छा से अपने स्वधर्मों में वापिस लौटे हैं। किसी कारण वे चाहे भटक गए थे परंतु अब उन्हें विदेशी इशारों पर चल रहे धर्मांतरण का चक्कर समझ आ गया है।

कार्यक्रम के दौरान पंडित शास्त्री ने हवन यज्ञ करवाकर इन परिवारों का यज्ञोपवीत संस्कार करवाया और मूल धर्म में लौटने पर सभी को सम्मानित किया। समारोह को संबोधित करते हुए धर्मजागरण विभाग के प्रांत संयोजक ने कहा कि विदेशी धन और विदेशी मानसिकता से लैस ईसाई मिशनरियां हिंदू समाज को अब और गुमराह नहीं कर सकतीं। इस अवसर पर उपस्थित वक्ता ने कहा कि भगवान वाल्मीकि हमारे समाज के आदिपुरूष हैं। उन्होंने युगों पहले रामायण की रचना कर भारतीय संस्कृति को नया मोड़ दिया और नैतिक मूल्यों की स्थापना की। धर्मजागरण विभाग के विभाग संयोजक अपने संबोधन में कहा कि हमारे गुरू तेगबहादुर, गुरू गोबिंद सिंह जी एवं उनके चारों साहिबज़ादों, ने अपने प्राणों की आहूति धर्म की रक्षा के लिए दी। हमें उन्हीं के मार्ग का अनुसरण करना है। ❖

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh

NATIONAL CHIKITSAK GURU
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.

B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

हाटकोटी मंदिर को एक करोड़ रूपए

प्रदेश के प्रसिद्ध मंदिरों की फेहरिस्त में खास स्थान रखने वाला हाटकोटी मंदिर जल्द ही एक आकर्षक अंदाज में दिखेगा। मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए भाषा एवं संस्कृति विभाग की ओर से महत्त्वाकांक्षी योजना तैयार की गई है। इस योजना को सिरे चढ़ाने के लिए सरकार ने एक करोड़ रूपए की राशि भी जारी कर दी है। इस राशि से मंदिर परिसर समेत मुख्य मंदिर में कई कार्य किए जाने हैं। तय योजना के मुताबिक मंदिर की परिक्रमा करने के लिए मंदिर के बाहर विशेष गोलाकार गैलरी बनाई जाएगी। इसके साथ ही दर्शन करने के स्थान पर दर्शनार्थियों के लिए अलग से बैठक कक्ष का निर्माण किया जाएगा साथ ही परिसर को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए कई कार्य किए जाने हैं। हाटकोटी में महिषासुरमर्दिनी का पुरातन मंदिर के शीर्ष भाग पर पत्थर की स्लेट की ढलानदार छत है।

शिमला से लगभग 104 किलोमीटर दूर, शिमला-रोहडू मार्ग पर पब्बर नदी के दाहिने किनारे पर धान के खेतों के बीच माता हाटकोटी के प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर के दर्शन होते हैं। कहते हैं कि यह मंदिर 10वीं शताब्दी के आसपास बना है। इसमें महिषासुरमर्दिनी प्रतिमा तोरण सहित विद्यमान पत्थरों से सुसज्जित किया निर्मित है। इसके अतिरिक्त देवताओं की छोटी-छोटी कि इनका निर्माण पांडवों ने में दुर्गा मंदिर के साथ शिव मंदिर भी है। इस मंदिर

की दो मीटर ऊंची कांस्य की है। दरवाजों को कलात्मक गया है। छत लकड़ी से यहां मंदिर के प्रांगण में मूर्तियां हैं। बताया जाता है करवाया था। हाटकोटी मंदिर शिखरनुमा शैली में बना का द्वार शांत मुखमुद्रा में अष्टभुज नटराज शिव से सुसज्जित है। शिव मंदिर के गर्भगृह मे प्रस्तर शिल्प में निर्मित शिवलिंग, दुर्गा, गुरूड़ासीन लक्ष्मी, विष्णु, गणेश आदि की प्रतिमाएं हैं। इस मंदिर का द्वार मुख तथा बाह्यप्रस्तर दीवारें कीर्तिमुख, पूर्णघट, कमल और हंस की नक्काशी के साथ अलंकृत हैं। नागर शैली में बने अन्य पांच छोटे-छोटे मंदिर प्रस्तर शिल्प के जीवन अलंकरण को प्रस्तुत करते हैं। हाटकोटी मंदिर ट्रस्ट ने मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए सरकार की ओर एक करोड़ रूपए की राशि देने पर मुख्यमंत्री का आभार जताया है। ❖

केंद्र की सौगात से हिमाचल के पर्यटक स्थलों की बदलेगी तस्वीर

केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन योजना के तहत हिमाचल में पर्यटक स्थल विकसित करने के लिए 100 करोड़ का बड़ा तोहफा दिया है। इससे प्रदेश के अनेक पर्यटक स्थलों की तस्वीर बदलेगी। हिमालय सर्किट के लिए पर्यटन केंद्र भी विकसित किए जाएंगे। इसके अलावा एडीबी प्रोजेक्ट के तहत भी प्रदेश के करोड़ों रूपए खर्च कर पर्यटक स्थलों को विकसित किया जा रहा है। प्रदेश पर्यटन विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष मेजर विजय सिंह मनकोटिया ने बताया कि केंद्र सरकार ने दो दिन पूर्व ही हिमालयन सर्किट के तहत प्रदेश को पर्यटन विकास के लिए 100 करोड़ की राशि मंजूर की है जिसके तहत धर्मशाला, शिमला, कुल्लू-मनाली सहित विभिन्न पर्यटक स्थलों को संवारा जाएगा। धर्मशाला में डलझील, पालमपुर, के शहीद सौरभ कालिया वन विहार, बीड़-विलिंग में एयरो स्पोर्ट्स सेंटर, चंबा में भलई माता आदि को भी विकसित किया जाऐगा।❖

मातृवन्दना के पाठक सम्मेलन में सिरमौर के बायला में मातृवन्दना संस्थान के सचिव राजेश बंसल पाठकों को पत्रिका के बारे में जानकारी देते हुए।

मातृवन्दना पत्रिका पाठक सम्मेलन में बायला के आए हुए पाठकगण जानकारी लेते हुए।

नालागढ़ में मातृवन्दना पाठक सम्मेलन में उपस्थित प्रचार विभाग के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पत्रिका के पाठकगण।

राजगढ़ में मातृवन्दना पाठक सम्मेलन में उपस्थित प्रचार विभाग के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पत्रिका के पाठकगण।

बद्दी (सोलन) में मातृवन्दना पाठक सम्मेलन में उपस्थित प्रचार विभाग के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पत्रिका के पाठकगण।

शिमला के चिढ़गाँव में मातृवन्दना पाठक सम्मेलन में सम्पादक डा० दयानन्द शर्मा पाठकों के सुझाव लेते हुए।

जाकिर नाइक की संस्था पर 5 साल के लिए प्रतिबंध

केंद्र सरकार ने जाकिर नाइक की संस्था इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन-आईआरएफ को गैर कानूनी गतिविधि रोकथाम कानून-यूएपीए के तहत पांच साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया है। जाकिर नाइक और उसकी संस्था पर आतंकवाद को शह देने और धार्मिक सौहार्द्र बिगाड़ने तथा विदेशों से हासिल चंदे का दुरूपयोग करने का आरोप भी लगा है। आईआरएफ के खिलाफ कार्रवाई यूएपीए की धारा तीन-1 और धारा तीन-3 के तहत की गई है। जाकिर नाइक और उनकी संस्था पर धारा 153 के तहत धार्मिक सौहार्द्र बिगाड़ने का भी आरोप पुख्ता पाया गया है। फैसला तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है। संस्था पर कानूनी एजेंसियां पूरी नजर रखेंगी। उसे किसी भी तरह की गतिविधि संचालित करने या चंदा लेने की इजाजत नहीं होगी। कार्रवाई के पहले जांच एजेंसियों ने जाकिर नाइक के भाषणों की गहन छानबीन की थी, संस्था की गतिविधियों को खंगाला गया एवं उसके खिलाफ महाराष्ट्र और केरल में दर्ज एफआईआर को भी आधार बनाकर जांच की गई।

एनआईए, आईबी, महाराष्ट्र पुलिस सहित अन्य एजेंसियां जाकिर और उसकी संस्था के खिलाफ शिकायतों की पड़ताल कर रही थीं। जांच में केरल से भागकर आईएस में शामिल होने सीरिया गए युवकों का भी जाकिर की संस्था से जुड़ाव सामने आया है। जाकिर के भड़काऊ भाषण से दूसरे धर्मों के प्रति दुर्भावना फैलाकर लोगों को भड़काने का पुख्ता सबूत भी जांच एजेंसियों के हाथ लगे हैं। गौरतलब है कि बांग्लादेश में आतंकी घटना के बाद जाकिर की संस्था के खिलाफ जांच शुरू की गई थी। ढाका हमले में शामिल इम्तियाज को जाकिर के भाषणों से प्रेरित बताया गया था। इसके बाद से ही जाकिर की संस्था जांच एजेंसियों के राडार पर थी। प्रथम दृष्टया आरोप सही पाए जाने के बाद ही सरकार ने आईआरएफ को बिना सरकार की अनुमति के विदेशी चंदा लेने पर रोक लगाई थी। जाकिर की संस्था का एफसीआरए नवीनीकरण करने वाले अधिकारियों को निलबिंत भी कर दिया। ❖

पेप्सी, कोक में मिले जहरीले तत्व

भारत में बिक रहीं पांच सॉफ्टड्रिंक्स पेप्सी, कोकाकोला, माउंटेन डयू, स्प्राइट और सेवेनअप के सैंपल में भारी मेटल, सीसा, कैडमियम, क्रोमियम पाए गए हैं। केन्द्रीय स्टेट हैल्थ मिनिस्टर फग्गन सिंह कुलस्ते ने राज्यसभा में यह जवाब दिया। कराई गई थी जांच कुलस्ते ने एक सवाल के जवाब में बताया कि ड्रग टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड (डीटीएबी) ने पांच कोल्ड ड्रिंक्स के सैंपल जांच की खातिर लिए थे। इन्हें कोलकाता के नेशनल टेस्ट हाउस भेजा गया था। जांच रिपोर्ट में इनमें जहरीले पदार्थ पाए गए हैं। पेप्सी, सेवेनअप और माउंटेन डयू, पेप्सिको कंपनी के प्रॉडक्ट हैं। स्प्राइट और कोकाकोला को कोका कोला कंपनी बनाती है। हेल्थ मिनिस्ट्री ने इस साल अप्रैल में कोलकाता के ऑल इंडिया इंस्टीटयूट ऑफ हाइजीन एंड पब्लिक हेल्थ (एआईआईएचएंडपीएच) को सॉफ्टड्रिंक्स, अल्कोहल, जूस और कुछ ड्रिंक्स की जांच करने को कहा था। इसके बाद ही पांचों सॉफ्टड्रिंक्स के सैंपल लिए गए थे। ❖

कच्छ के रण से होकर बहती थी सरस्वती नदी

सरकार ने संसद में पौराणिक सरस्वती नदी के संबंध में मिले वैज्ञानिक प्रमाणों की जानकारी देते हुए राज्यसभा को बताया कि विशेषज्ञ समिति के मुताबिक,

सरस्वती नदी हिमालय से कच्छ के रण तक लंबा रास्ता तय करती थी। उन्होंने बताया कि विशेषज्ञ समिति ने रिमोट सेंसिंग, भूगर्भ वैज्ञानिक, भूजल वैज्ञानिक और पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है। हिमालय से निकलकर यह बड़ी नदी घग्गर-हाकरा-नारा नदी का चैनल बनाती हुई कच्छ के रण तक जाती थी। समिति ने बताया कि नदी हरियाणा, राजस्थान और उत्तरी गुजरात से होकर बहती थी। बालियान ने कहा कि समिति ने सरकार से पौराणिक नदी संबंधी वैज्ञानिक सूचना एकत्र करने के लिए डाटा बैंक बनाने के सिफारिश की है। ❖

वायुसेना में धर्म के आधार पर दाढ़ी नहीं रख सकते: सुप्रीम कोर्ट

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि वायुसेना कर्मी धार्मिक आधार पर दाढ़ी नहीं रख सकते। शीर्ष अदालत ने साफ किया है कि कर्मियों की निजी वेषभूषा की नीति का उद्देश्य धार्मिक मान्यताओं के खिलाफ भेदभाव करना नहीं, एकरूपता और अनुशासन सुनिश्चित करना है, जो प्रत्येक सैन्य बल के लिए अपरिहार्य है। इस संबंध में चीफ जस्टिस टीएस ठाकुर, जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस एल. नागेश्वर राव की पीठ ने वायुसेना के दो मुस्लिम कर्मियों मोहम्मद जुबैर और अंसारी आफताब अहमद की याचिकाएं खारिज कर दीं। पीठ ने कहा कि बड़े सैन्य बल के प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए उसके सदस्यों में जाति, पंथ, रंग या धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना संघ की भावना के साथ आपसी जुड़ाव होना चाहिए। 26 अगस्त, 2005 को वायुसेना ने एक पत्र जारी किया था कि 24 फरवरी, 2003 और 9 जुलाई, 2003 की वर्तमान नीति के तहत कर्मियों को धार्मिक आधार पर दाढ़ी रखने की अनुमति नहीं है। आदेश को मोहम्मद जुबैर और अंसारी आफताब अहमद ने पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट में चुनौती दी थी। हाई कोर्ट ने उनकी याचिकाएं, खारिज कर दीं तो दोनों ने हाई कोर्ट की व्यवस्था को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। ❖

आईएनएस नौसेना बेड़े में

रक्षा मंत्री श्री मनोहर परिकर ने मिसाइल विध्वंसक पोत (आईएनएस चैन्नई) को नौसेना में शामिल किया। यह कोलकाता श्रेणी का ऐसा तीसरा निर्देशित मिसाइल विध्वंसक है, जिसका डिजाइन स्वदेशी है। इस पोत का निर्माण मुंबई के मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में किया गया। इसके साथ ही परियोजना 15-ए पूरी हो गई है। यह परियोजना कोलकाता श्रेणी के निर्देशित मिसाइल विध्वंसक बनाने के लिए थी। इस मौके पर नौसेना प्रमुख एडमिरल सुनील लांबा भी मौजूद थे। कुल 164 मीटर लंबा-आईएनएस चेन्नई भारतीय नौसेना के बेड़े में शामिल होने वाले सबसे बड़े विध्वसंकों में से एक है। इस पोत में सतह से सतह तक मार करने में सक्षम सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइलें और सतह से हवा में लंबी दूरी तक मार कर सकने वाली बराक-8 मिसाइलें लगी हैं। इस श्रेणी के पहले पोत का नाम-आईएनएस-कोलकाता था और इसका जलावतरण 16 अगस्त, 2014 को किया गया था। दूसरे पोत का नाम-आईएनएस-कोच्चि था जिसका जलावतरण 30 सितंबर, 2015 को किया गया। इस विध्वंसक पोत के भारतीय नौसेना के बेड़े में जुड़ने से मारक क्षमता वाले पोतों की संख्या बढ़ गई है जो कि भारत की सामरिक सैन्य शक्तियों में अभूतपूर्व रूप से वृद्धि हुई। ❖

The touch of pink is
the touch of health.

As we grow into a complete healthcare company, we work to bring people better lives and better futures with advanced healthcare products and services. From innovative contraceptives to hospital equipment, healthcare services and pharma products to public healthcare programs, we're doing all it takes to make every generation glow with the touch of pink, the touch of good health.

www.lifecarehll.com

HLL Lifecare Limited
Innovating for Healthy Generations

Contraceptives | Surgical and Hospital Products & Equipments | Medical Infrastructure Projects | Women's Health Care | Diagnostic Services | Vaccines
Rapid Test Kits | Natural Health Care Products | Procurement and Consultancy Services | Social and Health Care Franchising
Condom Promotion and AIDS Prevention Programs | Hospitals and Mobile Clinics | Public Health Program Implementation and Technical Support for NGO's

औपनिवेशिकता की बेड़ियां तोड़ने का समय

-लोकेन्द्र सिंह

हमें स्वाधीनता जरूर 15 अगस्त, 1947 को मिल गई थी, लेकिन हम औपनिवेशिक गुलामी की बेडियां नहीं तोड़ पाए थे। अब तक हमें औपनिवेशिकता जकड़े हुए थी। पहली बार हम औपनिवेशिकता से मुक्ति की ओर बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। हम कह सकते हैं कि भारत नये सिरे से अपनी 'डेस्टिनी' (नियति) लिख रहा है। यह बात ब्रिटेन के ही सबसे प्रभावशाली समाचार पत्र 'द गार्जियन' ने 18 मई, 2014 को अपनी संपादकीय में तब लिखा था, जब राष्ट्रीय विचार को भारत की जनता ने प्रचंड बहुमत के साथ विजयश्री सौंपी थी। गार्जियन ने लिखा था कि अब सही मायने में अंग्रेजों ने भारत छोड़ा है (ब्रिटेन फाइनली लेफ्ट इंडिया)। आम चुनाव के नतीजे आने से पूर्व नरेन्द्र मोदी का विरोध करने वाला ब्रिटिश समाचार पत्र चुनाव परिणाम के बाद लिखता है कि भारत अंग्रेजियत से मुक्त हो गया है। अर्थात् एक युग के बाद भारत में सुराज आया है।

भारत अब भारतीय विचार से शासित होगा। गार्जियन का यह आकलन सच साबित हो रहा है। हम देखते हैं कि पिछले ढाई साल में भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने के महत्वपूर्ण प्रयास हुए हैं। जिस ज्ञान के बल पर कभी भारत का डंका दुनिया में बजता था, उस ज्ञान को फिर से दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने की तैयारी हो रही है। हालांकि भारतीय ज्ञान-विज्ञान परंपरा में अपना उत्थान देखने के प्रयास स्वाधीनता मिलने के साथ ही किए जाने चाहिए थे, लेकिन औपनिवेशक मानसिकता और उसकी दासता के कारण हमने अपने गौरवशाली इतिहास के पन्ने कभी पलटकर देखने की कोशिश ही नहीं की। बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि किसी सुनियोजित षड्यंत्र के तहत भारत के प्राचीन विज्ञान को नजरअंदाज किया गया, उसे इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए दफन करने का प्रयास किया गया। पोथियों पर धूल जमा होने दी। बहरहाल, आजादी के 68 साल बाद आई राष्ट्रीय विचार की सरकार ने एक बार पुन: भारतीय ज्ञान के प्रति दुनिया में आकर्षण पैदा कर दिया है। केन्द्र सरकार ने सबसे पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग की उपयोगिता को स्थापित किया। यह सिद्ध किया कि योग दुनिया के लिए भारत का उपहार है। इसी क्रम में केंद्र सरकार भारत की चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद को स्थापित करने का प्रयास कर रही है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के बाद मोदी सरकार ने राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाने का निर्णय लिया है। प्रधानमंत्री और उनकी सरकार के इस फैसले का स्वागत किया जाना चाहिए। देश में पहली बार धनतेरस के दिन वास्तविक धन (भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा) की स्तुति की गई। मैंने आयुर्वेद के चिकित्सकों से जब इस परिवर्तन पर बात की तब उन्होंने माना कि सुखद बदलाव की आहट सुनाई दे रही है। उनका मानना था कि जिस चिकित्सा पद्धति को भारत की मुख्य चिकित्सा पद्धति होना चाहिए था, वह वर्षों से वैकल्पिक बनी हुई है। शायद ही कोई देश अपनी ज्ञान-परंपरा का इतना अनादर करता होगा।

आयुर्वेद चिकित्सकों ने भरोसा जताया है कि केंद्र सरकार आयुर्वेद को विश्व में भारतीय चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित करने के प्रयास करेगी। उनका भरोसा अकारण नहीं है। बल्कि आयुर्वेद के प्रति वर्तमान सरकार की प्रतिबद्धता देखकर उनकी उम्मीदें जागी हैं। आयुर्वेद चिकित्सा से वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति का ठप्पा हटाने और उसके विस्तार एवं विकास के लिए केंद्र सरकार ने सबसे पहले आयुष मंत्रालय को स्वास्थ्य मंत्रालय से स्वतंत्र

कर दिया है, ताकि आयुर्वेद सहित भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को पाश्चात्य चिकित्सा पद्धतियों के मुकाबले दमदारी से खड़ा किया जा सके। हम उम्मीद करते हैं कि सरकार के प्रयास रंग लाएंगे। हालांकि अभी इस दिशा में बहुत काम बाकी है। पिछले 65-70 वर्षों में आयुर्वेद को लेकर जितना शोध होना चाहिए था, उसका एक प्रतिशत भी नहीं हुआ है। आयुर्वेद को स्थापित करना है, तब इस क्षेत्र में शोध की महती आवश्यकता है। दुनिया के अनेक देश आयुर्वेद में शोध कर रहे हैं, जड़ी-बूटियों के पेटेंट करा रहे हैं, लेकिन हमने अब तक महज 200 पेटेंट ही कराए हैं। आज हमारे समक्ष स्थिति ऐसी बन पड़ी है कि न केवल हमें अपने ज्ञान को स्थापित करना है, बल्कि उसे दूसरे के हाथों से बचना भी है। यह सब करने के लिए औपनिवेशिक मानसिकता की जंजीरें टूटनी चाहिए, जो टूट रही हैं। आज देश में जिस प्रकार का सकारात्मक वातावरण बना है, उसका सदुपयोग होना ही चाहिए। यकीनन अब समय आ गया है कि हम औपनिवेशक गुलामी की जंजीरें तोड़कर फेंक दें।

❖लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग में कार्यरत हैं।

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

बदलते वक्त में

जब आठ नवंबर को प्रधानमंत्री ने पांच सौ और हजार रूपये के बड़े नोटों का चलन बंद करने की घोषणा की थी, तभी यह स्पष्ट हो गया था कि थोड़ी मुश्किल जरूर होगी, पर इस कदम के पीछे मंशा लेन-देन में पारदर्शिता लाने की है। यही वजह है कि नोटबंदी के तरीके और तैयारियों को लेकर संसद के भीतर और बाहर भले सवाल उठे हैं, मगर इस सच्चाई से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि डिजिटल लेन-देन के जरिए धन के गलत प्रवाह को रोका जा सकता है। बेशक, हमारा देश डिजिटल लेन-देन के लिए अभी पूरी तरह से तैयार नहीं है, लेकिन नोटबंदी की घोषणा के बाद शहरों में डेढ़ सौ फीसदी तक डिजिटल लेने-देन बढ़ गया है, तो इसका मतलब यही है कि लोग धन के व्यवहार के इस नए तरीके को अपना रहे हैं। सरकार के थिंक टैंक नीति आयोग ने डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने के मकसद से पचास रूपए से लेकर तीन हजार रूपये के लेन-देन पर ग्राहकों और व्यापारियों के लिए जो लकी ग्राहक और डिजि धन व्यापारी योजनाओं की घोषणा की है, ऐसा लगता है कि उसके केंद्र में ग्रामीण अर्थव्यवस्था है।

असल में नोटबंदी के पहले देश में जो बीस फीसदी के आसपास डिजिटल लेन-देन हो रहा था, उसका बड़ा हिस्सा शहरों पर ही केंद्रित था और ग्रामीण अर्थव्यवस्था तकरीबन पूरी तरह से नकदी के भरोसे ही चल रही थी। इस पुरस्कार योजना के लिए 340 करोड़ रूपये रखे गए हैं और 25 दिसम्बर से 14 अप्रैल के बीच लकी ड्रॉ के जरिये ग्राहकों और व्यापारियों को एक हजार रूपये से लेकर एक करोड़ रूपये तक के इनाम जीतने का अवसर मिलेगा। दरअसल प्रौद्योगिकी के सही इस्तेमाल से पारदर्शिता तो आती ही है, समय और श्रम भी बचता है। इसका एक उदाहरण आधार है, जिसे मनरेगा और रसोई गैस सिलेंडर से जोड़ने के उल्लेखनीय परिणाम मिले हैं इस पुरस्कार योजना में भी रूपे कार्ड के साथ ही भुगतान के जिन तरीकों को जोड़ा गया है, उनमें आधार आधारित भुगतान प्रणाली भी शामिल है। दरअसल नोटबंदी के बाद बैंकों और एटीएम में लगी कतारों की वजह से हो रही आलोचना के बीच सरकार के डिजिटल भुगतान के लिए पेट्रोल पंप और रेलवे आरक्षण में डिजिटल भुगतान पर कई तरह की छूट पहले ही दी है, नकदी विहीन अर्थव्यवस्था की दिशा में उसका यह एक और महत्वपूर्ण कदम है। ❖ **साभार: अमर उजाला**

परिभाषा प्रेम की

आजकल बदल रही है
परिभाषा प्रेम की,
हुई बातें बीती,
वो कहना,
नटना जरा सा,
बात-बात पर रीझना,
वक्त लगता था,
प्रेम तब देह से नहीं
रूह से होता था,
अब आकर्षण दैहिक है,
प्यार की तड़प में
जिजीविषा दम तोड़ रही है,
दो दिन में प्यार
परवान होने के बाद,
अब प्रेमियों की टोली
नए चेहरों से संबंध
जोड़ रही है।

-मनोज कुमार 'शिव'
नम्होल, बिलासपुर, हि.प्र.

मतभेद

स्वभाविक है विचारों में
उत्पन्न होंगे मतभेद
सुलझा लिए जाएंगे
चर्चा चिंतन, मनन से
नहीं उपजने देंगे मन भेद!
न सुलझे मतभेद
तो बढ़ जाती तकरार
यहां वहां विरोध की झड़ें
उठाए विरोधी
चिंता में पड़ जाए सरकार!
पुतला फूंक चौराहे पर
नारा मुर्दाबाद
त्यागपत्र की मांग उठे
सुलझ गया विवाद!
अक्ल आई
मतभेद मिटाने हेतु
एक कमेटी बनाई
कमेटी के कहने पर
मिट गया मतभेद
समय बरबाद हुआ राष्ट्र का
जताया सब ने खेद!

-के.सी. शर्मा 'गग्गलवी'
कांगड़ा, हि.प्र.

चिन्ता

बहुत बुरी है चिन्ता भाई,
जीवन बनता है दु:खदाई।
चिन्ताग्रस्त जो है रहता,
कई कष्टों को वह है सहता।
चाहे धन-वैभव हो अपार,
भाता न उसे घर-परिवार।
मुस्कुराहट के पड़ते लाले,
खुशियों पर हैं जड़ते ताले।
सुख-शान्ति का रहे अभाव,
कैसे हों भला पूरे चाव?
मानव खुलकर न करता बात,
गुमसुम रहता वह दिन-रात।
हृदय-रोग व मानसिक तनाव,
कर जाते हैं गहरे घाव।
जब चिंता हो मन में भारी,
उभर सके ना, नर व नारी।
जग लगता न उसको सुन्दर,
चिन्ता रहती जिसके अन्दर।
चिन्ता चिता समझो समान,
बोलें ऐसे वचन सुजान।
चिन्ता जब भी हृदय समाए,
शरीर को यह कृष कर जाए।
कहे 'प्रसाद' चिन्ता छोड़ो,
ईश से तुम नाता जोड़ो।

- रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'
सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.

ज़लन

रास्तों के कांटों ने इतना साथ निभाया,
निकाल के खूँ पैर से जमीं में मिलाया,
जुल्म की भी हद होती है यार,
धरती दरका के अटूट पहाड़ गिराया।
चल रही हैं चिंताओं की चालें दुनिया में
आँख मिचौली के आड़म्बरों ने जमाना हिलाया
गटक लिया माँ ने जहर जमाने का
जब बुलाने पर बेटा पास नहीं आया
ये आए ये हवा और ये घी तेल 'कश्मीर'
इन्होंने जलाकर चड़ाचड़ सब कुछ राख बनाया

-कश्मीर सिंह
रजेरा, चम्बा, हि.प्र.

समस्त रोगों की अमृत दवा-त्रिफला

आजकल मनुष्य प्रकृति से जितना दूर होता जा रहा है, उतना ही वह विभिन्न रोगों से घिरता जा रहा है। वर्तमान की अपेक्षा पहले के लोग ज्यादा स्वस्थ तथा सुखी होते थे, क्योंकि वे अथक परिश्रम करते, शुद्ध आहार ग्रहण करते तथा स्वच्छ रहते थे।

स्वस्थ तथा दीर्घ आयु तक जीने के लिये एक बहुश्रुत पदार्थ है-त्रिफला। यदि कोई व्यक्ति त्रिफला का नियमित रूप से निर्दिष्ट नियमों के आधार पर निरन्तर बारह वर्षों तक सेवन करता रहे तो उसका जीवन सभी तरह के रोगों से मुक्त रहेगा।

त्रिफला में तीन पदार्थ हैं- आँवला, बहेड़ा और पीली हरड़। इन तीनों का सम्मिश्रण त्रिफला कहलाता है। आँवला, बहेड़ा और पीली हरड़ से भला कौन अपरिचित है? ये तीनों पदार्थ सहज में ही मिल जाते हैं। इन्हें प्राप्तकर घर पर ही त्रिफला का निर्माण किया जा सकता हैं। त्रिफला बनाने की विधि इस प्रकार है-

त्रिफला के लिये इन तीनों पदार्थों के सम्मिश्रण का एक निश्चित अनुपात है। यह इस प्रकार है-पीली हरड़ का चूर्ण एक भाग, बहेड़े के चूर्ण का दो भाग और आँवले के चूर्ण का तीन भाग। इन तीनों फलों की गुठली निकालकर खरल आदि में कूट-पीसकर चूर्ण का मिश्रण तैयार कर लें। यह मिश्रण काँच की बोतल में कॉर्क लगाकर रख दें, ताकि बरसाती हवा इसमें न पहुँच सके। चार माह की अवधि बीत जाने पर बना हुआ चूर्ण काम में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि यह उतना उपयोगी नहीं रह पाता है जितना होना चाहिए।

त्रिफला के सेवन की विधि का भी हमें ज्ञान होना चाहिये। त्रिफला बारह वर्ष तक नित्य और नियमित रूप से विधिवत् प्रातः बिना कुछ खाये-पिये ताजे पानी के साथ एक बार लेना चाहिए। उसके बाद एक घंटे तक कुछ खाना-पीना नहीं चाहिये। कितनी मात्रा में यह लिया जाए, इसका भी विधान है। जितनी उम्र हो उतनी ही रत्ती लेनी चाहिये। परंतु एक बात ध्यान रहे कि इस त्रिफला के सेवन से एक या दो पतले दस्त होंगे, किंतु इससे घबराना नहीं चाहिये।

यदि यह त्रिफला प्रत्येक ऋतु में निम्न वस्तुओं के साथ मिलाकर लिया जाये तो इसकी उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि प्रत्येक ऋतु का अपना-अपना स्वभाव होता है। वर्ष भर में दो-दो माह की छः ऋतुएं होती हैं। त्रिफला के साथ कौन-सी ऋतु या माह में कौन-सा पदार्थ कितनी मात्र में लिया जाय, वह इस प्रकार है-

श्रावण और भाद्रपद यानी अगस्त और सितम्बर में त्रिफला को सेंधा नमक के साथ लेना चाहिये। जितना त्रिफला का सेवन करें, सेंधा नमक उससे छठा हिस्सा लें।

आश्विन और कार्तिक यानी अक्तूबर तथा नवम्बर में त्रिफला को शक्कर या चीनी के साथ त्रिफला की खुराक से छठा भाग मिलाकर सेवन करना चाहिये।

मार्गशीर्ष और पौष यानी दिसम्बर तथा जनवरी में त्रिफला को सोंठ के चूर्ण के साथ लेना चाहिये। सोंठ का चूर्ण त्रिफला की मात्रा से छठा भाग हो।

माघ तथा फाल्गुन यानी फरवरी और मार्च में त्रिफला को लैण्डी पीपल के चूर्ण के साथ सेवन करना चाहिये। यह चूर्ण त्रिफला की मात्रा के छठे भाग से कम हो।

चैत्र और वैशाख यानी अप्रैल तथा मई में त्रिफला का सेवन त्रिफला के छठे भाग जितना शहद मिलाकर करना चाहिये।

ज्येष्ठ तथा आषाढ़ यानी जून और जुलाई में त्रिफला को गुड़ के साथ लेना चाहिये। त्रिफला की मात्रा से छठा भाग गुड़ होना चाहिये।

जो व्यक्ति इस क्रम और विधि से त्रिफला का सेवन करता है, उसे निश्चित रूप से बहुविध लाभ होता है। ❖

किवी बनेगा विकल्प

बदलते पर्यावरण चक्र एवं पहाड़ों में कम होते चिलिंग आवर के मद्देनजर जहां भविष्य में सेब व अन्य गुठलीदार फलों पर संकट की संभावना है, वहीं सिंचाई की कमी के कारण सब्जी उत्पादन भी कम हो रहा है। ऐसे में किवी फल की व्यवसायिक खेती फल एवं सब्जी फसल का बेहतर विकल्प बन सकती है। इसके अलावा जंगली जानवरों के आतंक व घटती कृषि योग्य भूमि की वजह से भी हिमाचल में खेती कर रहे किसान घाटे के चलते इसे छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं। सोलन स्थित डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी में वैज्ञानिकों के शोध के अनुसार किवी फल अन्य फलों व सब्जियों में सबसे अधिक आय देने वाला है। इसके लिए नौणी विश्वविद्यालय के फल विज्ञान विभाग ने तकनीक विकसित की है, जिसका लाभ हिमाचल ही नहीं बल्कि पूर्वोत्तर भारत के अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, सिक्किम व मेघालय जैसे राज्य के किसान भी उठा रहे हैं। इन क्षेत्रों में किवी की व्यावसायिक खेती की जा रही है और उत्पादक अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। नौणी विवि के शोध रिकार्ड की माने तो यूनिवर्सिटी द्वारा विकसित की गई तकनीक से प्रति हेक्टेयर किवी फल के बगीचे से लागत के अनुपात में छह गुणा तक आमदनी ली जा सकती है। दूसरी तरफ सेब के एक हेक्टेयर बगीचे और सब्जी उत्पादन से यह मुनाफा दो-तीन गुणा ही होता है।

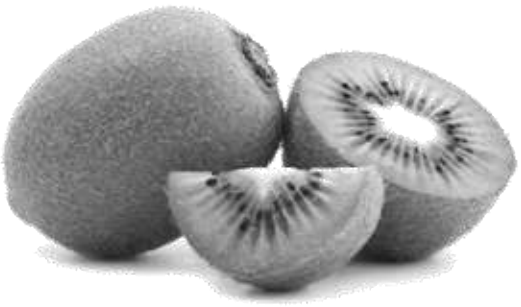

कम लागत में ज्यादा मुनाफा

किवी का फल अक्टूबर से दिसंबर तक पकता है, जिसकी भंडारण क्षमता बहुत अच्छी है। भारत में किवी फल में किसी गंभीर रोग अथवा कीट का प्रकोप नहीं देखा गया है। इसलिए फसल पर कीटनाशकों या रसायनों का छिड़काव नहीं करना पड़ता, जिससे यह फल स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभदायक है। हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों जिनकी समुद्रतल से ऊंचाई 900 से 1800 मीटर है, वहां किवी की अधिक संभावनाएं है। किवी के पौधों को फलने के लिए 600 से 800 घंटे की चिलिंग की जरूरत होती है।

किवी औषधीय गुणों की खान

किवी फल अपने विशेष स्वाद के चलते खाने में मजेदार है, जबकि यह औषधीय गुणों की खान है और स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद है, जो प्राकृतिक रूप से रक्त को पतला करता है। इसके अंदर प्रचुर मात्रा में रोग प्रतिरोधी तत्व व अन्य पोषक तत्व विद्यमान हैं, जबकि विटामिन-सी, फॉस्फोरस व पोटाशियम तो भरपूर मात्रा में उपलब्ध हैं। विज्ञानियों के मुताबिक एक मध्यम आकार के किवी में 46 कैलोरीज, 0.3 ग्राम फैट, एक ग्राम प्रोटीन, 11 ग्राम कार्बोहाईड्रेट, 75 मिलीग्राम विटामिंस व 2.6 ग्राम फाइबर होता है।

नौणी विश्वविद्यालय में दो दशक से हो रहा शोध

किवी पर विश्वविद्यालय में दो दशकों से शोध कार्य किया जा रहा है। शोध में यह पाया गया है कि किवी के पौधों को 17-18 बार ही सिंचाई की आवश्यकता होती है, जबकि पानी की कम उपलब्धता वाले जगहों पर पौधों में घास या अन्य किसी प्रकार की मल्चिंग से इस जरूरत को भी कम किया जा सकता है। विवि में अंतरराष्ट्रीय स्तर के बगीचे तैयार किए गए हैं, जिनमें आधुनिक तकनीक, ट्रेनिंग, स्ट्रक्चर, टपक सिंचाई, एंटी हेल नेट व सोलर फैंसिंग का उपयोग किया गया है।

हिमाचल में 25 साल से हो रही किवी की खेती

हिमाचल प्रदेश में किवी की खेती लगभग 25 साल पहले शुरू हो गई थी, लेकिन अब भी किसान इसे व्यवसायिक तौर पर नहीं अपना सके हैं। ❖ **साभार: दैनिक जागरण**

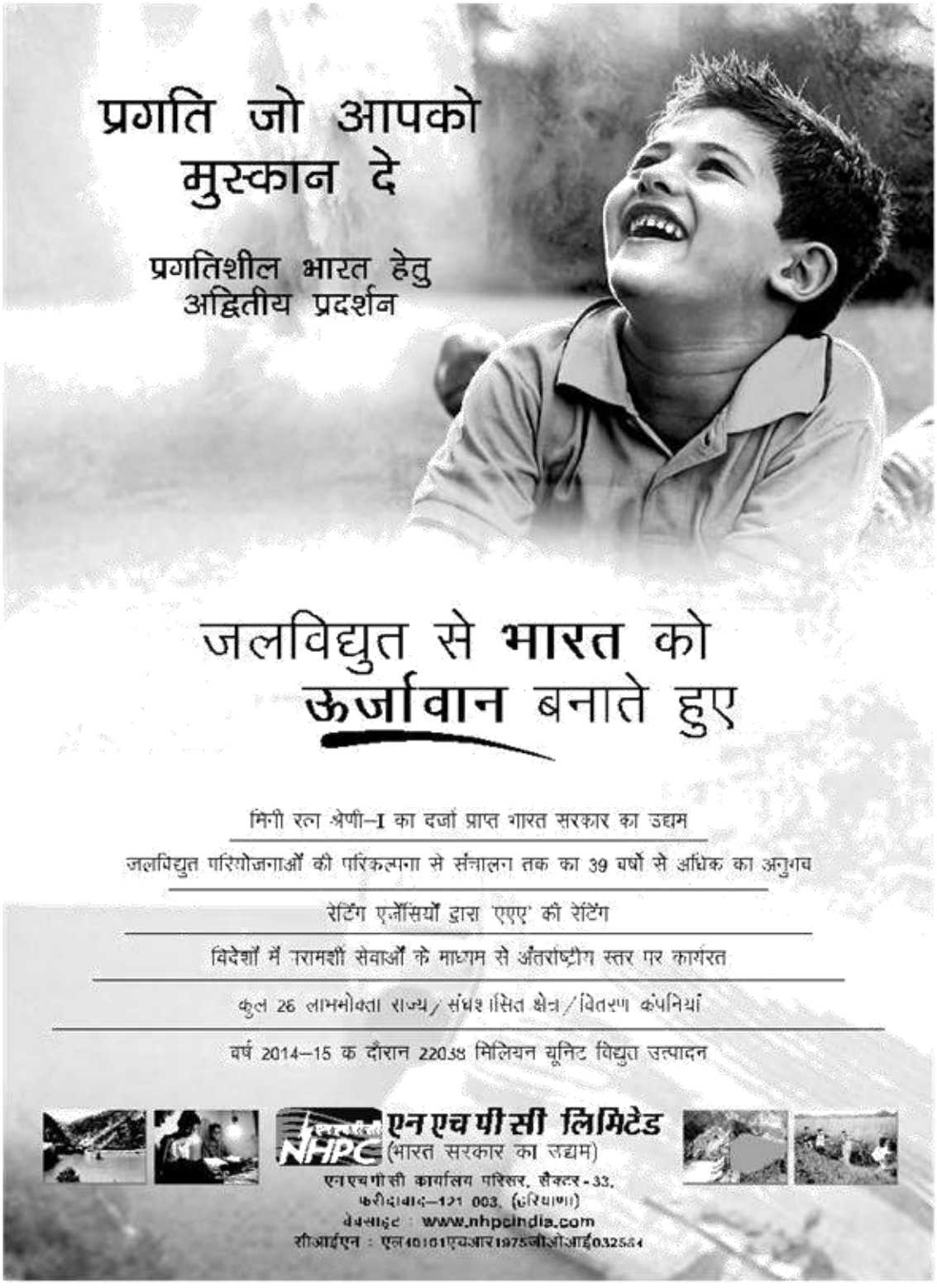
प्रगति जो आपको
मुस्कान दे
प्रगतिशील भारत हेतु
अद्वितीय प्रदर्शन
जलविद्युत से भारत को
ऊर्जावान बनाते हुए
मिनी रत्न श्रेणी–I का दर्जा प्राप्त भारत सरकार का उद्यम
जलविद्युत परियोजनाओं की परिकल्पना से संचालन तक का 39 वर्षों से अधिक का अनुभव
रेटिंग एजेंसियों द्वारा 'एएए' की रेटिंग
विदेशों में परामर्शी सेवाओं के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत
कुल 26 लाभभोक्ता राज्य/संघशासित क्षेत्र/वितरण कंपनियां
वर्ष 2014–15 के दौरान 22038 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन
NHPC
एनएचपीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
एनएचपीसी कार्यालय परिसर, सैक्टर-33,
फरीदाबाद–121 003, (हरियाणा)
वेबसाइट : www.nhpcindia.com
सीआईएन : एल40101एचआर1975जीओआई032564

नौकरी छोड़ कचरा प्रबंधन की जगा रहीं अलख 'रूचिका'

अमरिकन टेक्सटाइल कंपनी में बतौर जीएम (इंडिया) के पद पर कार्यरत रूचिका सेठी नौकरी छोड़ कचरे के प्रबंधन और निस्तारण को लेकर लोगों को जागरूक करने में जुटी हैं। बिना कोई गैर सरकारी संगठन और फाउंडेशन बनाए रूचिका अपने बलबूत 'क्लीन गुड़गांव' नाम से अभियान चला रही हैं। वह होटल, रेस्टोरेंट और कॉरपोरेट कंपनियों को ई-मेल व सोशल साइट के जरिए किस तरह कचरा कम पैदा हो इसके तरीके बता रही हैं, जिस पर अमल भी हो रहा है। गुड़गांव के निर्वाण कंट्री में रहने वाली रूचिका के साथ अब कई प्रतिष्ठित लोग भी जुड़ गए हैं।

अप्रैल 2014 में बच्चे को न्यूरो की समस्या आने के बाद रूचिका का ध्यान कचरे की समस्या की ओर गया। इस घटना के बाद उन्होंने कचरा निस्तारण और प्रबंधन को लेकर मुहिम शुरू की। सोशल साइट्स पर कैंपेन चलाए, लोगों को जोड़ा। लोगों के बीच गई और कचरे से होने वाली समस्याओं की ओर ध्यान दिलाया। समस्या से लोगों को निजात कैसे मिले इसका समाधान भी बताया। कचरा कम कैसे पैदा हो इसके तरीके बताते हुए उन्होंने कई कंपनियों को ई-मेल लिखे। इसका सार्थक नतीजा भी निकला और प्रतिष्ठित कंपनी कॉफी कैफे स्टारबक्स ने अपने यहां यूज एंड थ्रो मग की जगह मग लेकर आने वालों के लिए डिस्काउंट देना शुरू किया। इस पहल से ढेर सारा कचरा होने से बच गया। 18 रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) भी अपने क्षेत्र में कचरे को अलग-अलग कर रही है। इन जगहों पर कचरे से खाद बनाई जा रही है। रूचिका की पहल पर नगर निगम गुड़गांव ने अशोक विहार के वार्ड नं. 6 में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर कचरा प्रबंधन की व्यवस्था की हैं। यहां स्थानीय घरों से निकलने वाले कचरे का निस्तारण किया जा रहा है।

समस्या को लेकर सरकार गंभीर

राज्य की शहरी निकाय मंत्री कविता जैन का कहना है कि कचरा निस्तारण को लेकर सरकार संजीदा है। 79 नगर पालिकाओं के कचरा प्रबंधन पर हरियाणा सरकार 1540 करोड़ रूपए खर्च करेगी। वर्ष 2031 तक प्रतिदिन 6600 टन कचरे का निस्तारण किया जाएगा।

❖ **साभार: म्हारा देश म्हारी माटी**

"नर सेवा, नारायण सेवा" ही सेवा भारती का लक्ष्य है।

सेवा भारती शिमला की कार्यकर्ता डा० प्रियंका ने अकेले अपने दम पर इस वर्ष 1650 रोगियों के स्वास्थ्य की जांच की। इनमें से बहुत सारे रोगी ऐसे हैं जो अपनी दवाईयों का खर्चा नहीं दे सकते। डा० प्रियंका ने समय समय पर रोगियों के घर जाकर भी उनके स्वास्थ्य की जांच की। जिसके लिए सेवा भारती जिला शिमला उनकी अभारी है। इस प्रकल्प में सेवा भारती शिमला ने वर्ष 2014 में 445 रोगियों का, वर्ष 2015 में 565 रोगियों का, तथा वर्ष 2016 में 1650 रोगियों, के स्वास्थय की जांच व दवाईयां निशुल्क में वितरित की गई। ❖

लावारिस बच्चों को बना दिया वैज्ञानिक, प्रोफेसर

आंध्रप्रदेश के नेल्लोर जिले के गोलापालेम गांव में रहते हैं, रिटायर्ड रेलवे क्लर्क सरथ बाबू। इनकी पहचान यह है कि ये 120 से ज्यादा बच्चों के 'डैडी' हैं। दरअसल, ये इनके अपने बच्चे नहीं हैं, लेकिन इनके लिए ये अपनों से भी बढ़कर हैं। ये बच्चे उन्हें रेलवे स्टेशन पर मिले हैं, चोरी करते हुए, उठाईगिरी करते हुए, या फिर भीख मांगते हुए। सरथ बाबू का दिल पसीजा और उन्होंने इन बच्चों को अपना लिया। उनके इस कदम से इन बच्चों की जिंदगी बदल चुकी है। एक तो नेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट में बतौर साईंटिस्ट नियुक्त है वहीं एक अन्य प्रोफेसर है। हालांकि इसके बावजूद सरथ बाबू बेहद सरलता से

कहते हैं, यह सब उनकी प्रतिभा का फल है, वे खुद इतने योग्य थे कि यहां पहुंच गए, मैंने सिर्फ उनकी छोटी सी मदद की।

सरथ बाबू बताते हैं, जब मैं नेल्लोर रेलवे स्टेशन पर बतौर क्लर्क कार्यरत था, तब मैं बहुत से ऐसे बच्चों को देखता था जिनका कोई सहारा नहीं जान पड़ता था। तब मैंने सोचा कि इन बच्चों के लिए कुछ किया जाना चाहिए। मैंने उन्हें खाना, रहने और सोने की जगह मुहैया कराई। इसके बाद मैंने नेल्लोर जिले के अल्लूर मंडल गांव की पंचायत से संपर्क साधकर ऐसी जमीन मुहैया कराने का आग्रह किया जहां इन बच्चों के लिए रिहायश बनाई जा सके। बकौल सरथ बाबू, मैं एक प्रयोग करना चाहता था, जरूरतमंद बच्चों को अगर मौका मिले तो वे कहां तक जा सकते हैं?यह देखना था। पंचायत ने इसके लिए अस्थाई रूप से जमीन दे दी। इसके बाद हमने 30 गुणा 15 फीट का एक ढांचा वहां खड़ा किया।

सरथ बाबू के लिए खुद यह बेहद चुनौती भरा था क्योंकि ऐसा कुछ करने की सोच रहे थे जिसके लिए पहाड़ जैसा हौसला ही चाहिए था यहां रखे गए बच्चों की मानसिकता अभी पुरानी ही थी, लड़ाई-झगड़ा भी उनकी आदत थी लेकिन सरथ बाबू का संकल्प भी बेजोड़ था। इस बीच गांव वालों ने उनके प्रयास की गंभीरता को समझकर उन्हें 4.5 एकड़ में स्कूल और बच्चों के रहने के लिए जगह मुहैया करा दी। इसे बाल आश्रम नाम दिया गया। इस आश्रम में रेलवे स्टेशन से मिले बच्चे और गांव के अनाथ बच्चों को समान रूप से प्यार और संभाल दी जाती है। ❖ **साभार: दैनिक ट्रिब्यून**

यहां कुंओं की दीवार पर लिखी है रिश्वत की राशि

झारखंड से रिश्वतखोरी का दिलचस्प मामला सामने आया है। राज्य के गिरिडीह जिले में स्थित बेंगाबाद के मधवा पंचायत में कई कुओं पर कमीशन-खोरी की राशि लिख दी गई है। इस पर लाभार्थियों के खर्च का ब्यौरा भी दिया गया है। कमीशन के तौर पर जितनी राशि खर्च हुई है, उसका भी स्पष्ट उल्लेख किया गया है। ग्रामीणों की सबसे बड़ी रोजगार योजना में लूट और कमीशनखोरी किस कदर हावी है। उस बात को अब किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। मनरेगा योजना के तहत बनाए गए कुओं पर वह राशि लिखी हुई है। वे नाम भी लिखे हुए हैं, जिन्हें कमीशन दिया गया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि उन्होंने खेत से लेकर घर के कीमती जेवरात को गिरवी रखकर कुओं का निर्माण करवाया, लेकिन जब भुगतान की बारी आई तो मुखिया से लेकर सरकारी अधिकारी तक कमीशन की मांग करने लगे। राज्य के मनरेगा आयुक्त का कहना है कि मामला उनके संज्ञान में आया है। इसकी जांच के आदेश जारी कर दिए गए हैं। दोषी कोई भी हो, उसे बक्शा नहीं जाएगा। स्मरण रहे कि मनरेगा अपने प्रारंभिक काल से ही विवादों में घिरी रही है। अब इसके भ्रष्टाचार का नया मामला सामने आया है।

हिन्दुस्तान में कितने पाकिस्तान

-हिमानी दीवान

लाल किले वाली दिल्ली। कुतुब मीनार वाली दिल्ली। इंडिया गेट वाली दिल्ली। कनॉट प्लेस वाली दिल्ली। लाजपत नगर वाली दिल्ली। निजामुद्दीन वाली दिल्ली। हौज खास वाली भी दिल्ली और पाकिस्तानी मोहल्ले वाली भी दिल्ली ही है। जो लोग ये दावा करते हैं कि उन्होंने पूरी दिल्ली देखी है, उनके लिए जानकारी हैरानी भरी हो सकती है कि इसी दिल्ली में एक पाकिस्तानी मोहल्ला भी है। दक्षिणी दिल्ली के छतरपुर मेट्रो स्टेशन से करीब 15 किलोमीटर दूर हरियाणा के फरीदाबाद से लगा एक इलाका है भाटी माइन्स। इसी भाटी माइन्स में है पाकिस्तानी मोहल्ला। नाम से जो जाहिर होता है, असल में उसे समझना पेचीदा है। पाकिस्तानी मोहल्ले का मतलब है पाकिस्तानियों का मोहल्ला। मगर पाकिस्तानी मोहल्ले में रहने वाला लगभग 95 प्रतिशत लोग हिंदू हैं। ये सभी हिंदू पाकिस्तान से यहां आए हैं, इसलिए इनकी पहचान पाकिस्तानी ही है। इनका कहना यह है कि पाकिस्तान में इन्हें हिन्दू कहकर प्रताड़ित किया जाता था। इस प्रताड़ना से आजाद होने की उम्मीद लेकर ये हिन्दुस्तान आए, तो यहां इन्हें पाकिस्तानी कहकर अलग-थलग कर दिया जाता है।

पाकिस्तानी मोहल्ले का यह नाम भी, इसी बात की तस्दीक करता है। दो साल पहले पाकिस्तान के कराची से इस मोहल्ले में आई 35 वर्षीय हसीना से लेकर करीब 30 साल से यहां रह रहीं 60 वर्षीय मीरा तक सभी इस मोहल्ले का नाम बदलवाना चाहते हैं। ''हम यहां इसी वास्ते तो आये कि हिंदुस्तान हमारा मुल्क है। हम हिंदू हैं। हमारी पहचान यही है। मगर यहां भी हमारी पहचान पाकिस्तानी मोहल्ले से ही होती है। यहां बिजली के खंभे नहीं हैं। पानी दो दिन में एक बार आता है। फिर भी सबसे पहले हम चाहते हैं कि इस मोहल्ले का नाम बदला जाए, पाकिस्तानी सुनकर बुरा लगता है।'' हरी मिर्च से सूखी रोटी खाते हुए हसीना मोहल्ले का नाम बदलवाने की बात पर जोर देती हैं। पहली बार पाकिस्तान से यहां कौन आया होगा, इस बारे में ठीक-ठीक पता लगा पाना मुश्किल है। इतना जरूर है कि अब एक-दूसरे से पूछकर और जानकर हजारों की संख्या में पाकिस्तानी हिंदू यहां बस चुके हैं। कुछ लोगों का घर और काम जम गया है, तो कुछ अभी अपनी जमीन तलाशने में ही जुटे हैं। इन सब समस्याओं से इतर एक बात यहां सबके मन में एक जैसी है, वह है मोहल्ले का नाम। तीन साल पहले यहां आए अजय कहते हैं, ''15 अगस्त को हमने यहां के विधायक करतार सिंह तंवर को झंडा फहराने के लिए बुलाया था। उन्हें हमने अपनी यह मांग बताई थी। उन्होंने वादा किया है कि मोहल्ले का नाम बदलवा देंगे।'' अजय समझाते हैं, 'यह बहुत जरूरी है।

पाकिस्तान में हमें हिंदू होने के कारण परेशान किया जाता था। यहां हमारे पहचान-पत्रों पर हिंदुस्तान की मोहर तो लग गई है, लेकिन लोग हमें पाकिस्तानी ही कहते हैं।' बदलकर क्या नाम रखा जाएगा? इस सवाल पर भी अजय तुरंत जवाब देते हैं- ''राम कृपाल मोहल्ला।'' राम कृपाल ही क्यों? ''इसी मोहल्ले में एक आदमी था राम कृपाल। वह रामलीला में राम का किरदार करता था। कुछ साल पहले उसकी मौत हो गई। हम चाहते हैं कि उसी के नाम पर इस मोहल्ले का नाम रखा जाए''। अगर अजय की बात मान ली जाए, तो कुछ दिनों या सालों में 'पाकिस्तान मोहल्ला', 'राम कृपाल मोहल्ला' बन जाएगा। मगर इस पहचान से जुड़े कई सवाल शायद पूरे हिंदुस्तान में कई और जगहों पर बरकरार रहें। ❖

निम्नतम स्तर पर राजनीति

भारतीय राजनीति अपने निम्नतम स्तर को छू गई जब कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी और उनके सहयोगी संजय निरूपम जैसे कुछ नेताओं ने कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पार आतंकवादी कैंपों को ध्वस्त करने के लिए भारतीय सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में बहुत ही आपत्तिजनक बयान दिया। 2014 के लोकसभा चुनावों के दौरान भी सोनिया ने कुछ इसी तरह का एक और असभ्य बयान दिया। एक जनसभा में उन्होंने मोदी पर जहर की खेती करने और देश के सेक्युलर वातावरण को छिन्न-भिन्न करने का आरोप लगाया। इसने भी आम चुनाव में कांग्रेस की संभावनाओं को प्रभावित किया। आश्चर्यजनक रूप से राहुल गांधी ने ट्विटर पर कुछ ही दिनों पहले प्रधानमंत्री मोदी के कदम की जमकर तारीफ की थी। उन्होंने कहा था कि जब मोदी जी एक प्रधानमंत्री के लायक काम करते हैं तो मैं भी उनका समर्थन करता हूं। उन्होंने आगे कहा कि नरेंद्र मोदी ने ढाई साल में पहला ऐसा काम किया है जो प्रधानमंत्री पद के लायक हो। यहां उनकी बातों में अहंकार झलकता है।

जब 1971 का युद्ध समाप्त हो गया तब वाजपेयी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व की तारीफ की और उनकी तुलना देवी दुर्गा से की जिसे सभी समाचार पत्रों ने प्रथम पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित किया। लेकिन कांग्रेस जब विपक्ष की कुर्सी पर बैठती है और खासकर उसका नेतृत्व नेहरू-गांधी परिवार के हाथों मे जाता है तब वह अजीब तरीके से व्यवहार करती है।

ऐसा लगता है जैसे वह प्रशंसा करके मोदी पर दया कर रहे हैं। एक ऐसे व्यक्ति की ओर से इस तरह की टिप्पणी उल्लेखनीय है जो लंबे समय तक सांसद रहने के बाद भी सार्वजनिक पद पर कभी नहीं रहा है। जो लोकतंत्र का ककहरा भी नहीं जानता है, लेकिन दूसरों को इसकी सीख देता है। राहुल गांधी को लगता है कि उनके साथ सिर्फ गांधी नाम जुड़े होने के कारण ही उन्हें नरेन्द्र मोदी, जो कि देश के एक प्रमुख राज्य के एक दशक से अधिक समय तक मुख्यमंत्री रहे हैं, सहित दूसरों को प्रमाणपत्र बांटने का अधिकार मिल गया है। संजय निरूपम के बारे में कोई क्या कह सकता है?उन्होंने सार्वजनिक रूप से जवानों द्वारा अंजाम दिए गए साहसिक ऑपरेशन को फर्जी ठहरा दिया और भारतीय सेना से सुबूत की मांग की। इससे पहले हमने किसी राजनेता को अपनी सेना के ऑपरेशन पर इस तरह संदेह प्रकट करते और बहस को उस स्तर पर ले जाते नहीं देखा जिससे कि वह दुश्मन की नजरों में एक हीरो बन जाए। पाकिस्तानी मीडिया ने पीओके में भारतीय सेना की कार्रवाई की उपेक्षा की और इस सर्जिकल स्ट्राइक की कहानी को बकवास बताने के लिए उसने राहुल गांधी, केजरीवाल और निरूपम के बयानों को सुबूत के तौर पर पेश किया। ये राजनेता पाकिस्तानी मीडिया के आंखों के तारे बन गए और पाकिस्तान में ट्विटर पर पाकस्टैंड विद केजरीवाल सबसे ऊपर ट्रेंड करने लगा।

इन राजनेताओं को तनिक भी भान नहीं है कि वे अपनी ओछी राजनीति से जवानों की भावनाओं को कितनी चोट पहुंचा रहे हैं जिस सर्जिकल स्ट्राइक पर वे संदेह जता रहे है और सवाल उठा रहे हैं उसकी जानकारी 29 सितंबर को सीधे भारतीय सेना के डीजीएमओ (सैन्य अभियान के महानिदेशक) लेफ्टिनेंट जनरल रणबीर सिंह द्वारा दी गई थी। डीजीएमओ ने अपने बयान में कहा कि इस बात की विशेष और विश्वसनीय सूचना मिली थी कि कुछ आतंकवादी भारत में घुसपैठ करने की फिराक में सीमापार गुलाम कश्मीर में विभिन्न लांच पैड पर तैयार बैठे हैं और उनकी मंशा जम्मू-कश्मीर और दूसरे राज्यों में प्रमुख शहरों में हमला करने की है। सेना की कार्रवाई में आतंकवादियों और उनके मददगारों को भारी क्षति पहुंची है। भारतीय सेना के डीजीएमओ ने यह भी बताया कि उन्होंने पाकिस्तानी सेना के

डीजीएमओ से संपर्क कर इस सर्जिकल स्ट्राइक की जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि भारत की मंशा इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखना है, लेकिन हम सीमापार से आतंकवाद को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेंगे।

राहुल गांधी, संजय निरूपम और दूसरे नेताओं द्वारा आई प्रतिक्रियाएं 1965 और 1971 में (जब कांग्रेस सत्ता में थी) पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध के दौरान सभी पार्टियों द्वारा राजनीति से ऊपर उठकर दिखाई गई एकता के सर्वथा विपरीत है। इन युद्धों के दौरान और बाद में संसद में हुई बहस में सभी राजनीतिक दलों ने विरोध की भावना को परे रखकर एकता की भावना प्रकट की और आतंकवाद बढ़ाने और उन्माद भड़काने के लिए पाकिस्तान पर कड़ा दंड लगाने की मांग की। अटल बिहारी वाजपेयी, नाथ पई और अन्य नेताओं ने उन दिनों संसद में कांग्रेस सरकार को पूर्ण समर्थन दिया और हमारे जवानों के साहस की प्रशंसा की। 93 हजार पाकिस्तानी जवानों द्वारा भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण के साथ ही जब 1971 का युद्ध समाप्त हो गया तब वाजपेयी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व की तारीफ की और उनकी तुलना देवी दुर्गा से की जिसे सभी समाचार पत्रों ने प्रथम पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित किया। लेकिन कांग्रेस जब विपक्ष की कुर्सी पर बैठती है और खासकर उसका नेतृत्व नेहरू-गांधी परिवार के हाथों मे जाता है तब वह अजीब तरीके से व्यवहार करती है। जब वाजपेयी छह साल प्रधानमंत्री की कुर्सी पर रहे थे तब भी यह दिखाई दिया था, लेकिन वर्तमान में वह जिस तरह का रवैया दिखा रही है वह पहले कभी नहीं देखा गया है। अब पार्टी सेना के बयान को भी संदेह की नजर से देख रही है। शंकालु और अविश्वासी कांग्रेस अब भारतीय सेना के डीजीएमओ से सुबूत चाहती है। इससे ज्यादा शर्मनाक व्यवहार किसी ने कहीं नहीं देखा होगा। क्या यह अभी भी भारतीय 'राष्ट्रीय' कांग्रेस है? ❖ साभार: दैनिक जागरण

MAHARAJA AGRASEN UNIVERSITY
Spark... The Change
UGC APPROVED
Atal Shiksha Kunj, Kalujhanda Near Barotiwala, Baddi, Distt. Solan (HP)
❖ BEST UNIVERSITY OF YEAR 2015 IN THE CATAGORY "RESEARCH & DEVELOPMENT" ADJUDGED BY HIGHER EDUCATION REVIEW
❖ WINNER OF CCI TECHNOLOGY EDUCATION EXCELLENCE AWARD 2014 COMFORT BY GUJRAT TECHNOLOGICAL UNIVERSITY, GUJRAT

STRENGTHS OF THE UNIVERSITY

- All courses are as per UGC nomenclature and approved by respective regulatory bodies
- Choice Based Credit System (CBCS)
- Member: Association of Indian Universities (AIU)
- Highly Accomplished Faculty
- Regular Faculty Development Programmes
- Regular Guest Lectures by Experts from reputed Universities/ Industries
- Best exposure to National and International Seminars
- Industry Oriented Curriculum and regular Industrial Visits
- Wi-Fi Enabled Green Campus
- AC Class Rooms, Labs, Libraries and Seminar Halls etc.
- Amphitheatre and Auditorium
- Separate Hostel for Boys and Girls
- Fee Concessions/ Scholarships
- Rich Library Resources
- Medical Centre, Cafeteria, A.C Transport and ATM Facility
- Education Loan facility from Banks
- Best Placement and strong Corporate tie-ups
- Sports and Gym Facilities for Boys and Girls
- Summer Classes for the students needing additional academic support
- EWS families from surrounding areas under Corporate Social Responsibility (CSR) Project.

*Scholarship upto 50% is available for deserving candidates, for details please visit our website.

COURSES

Ph.D : ➢ Management, Travel & Tourism, Physics, Chemistry, Maths, English, Law, Environmental Sciences, ECE, ME, EEE

UNDER GRADUATE COURSES :
➢ B.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE) (AICTE approved), LEET
➢ Bachelor in Architecture (Approved by COA)
➢ LLB, BA LLB (Hons.) (Approved by BCI)
➢ B.Com ➢ B.Com (Hons) ➢ BBA, BBA (Tourism & Travel)
➢ Bachelor in Hotel Management & Catering Technology
➢ B.Sc (Medical/Non-Medical)
➢ B.Pharm, D.Pharm
➢ BA (Journalism) ➢ Bachelor of Fine Arts (BFA) (4 Years)

POST GRADUATE COURSES :
➢ M.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE)
➢ M.Com ➢ MBA (Master of Business Administration)
➢ MTTM (Master of Tourism & Travel Management) ➢ LLM
➢ M.Sc (Physics/Chemistry/Mathematics/Environmental Sciences/Bio-Technology/ Forensic Sciences)
➢ MA (English) ➢ MA (Journalism)
➢ Master of Fine Arts (Applied Arts/Painting/Sculpture) (2 Years)

MAIT: 15th All India rank in Engineering Including IITs & IIITs By DATAQUEST Survey 2013 Delhi Campus

Admission Open 2016-17

Admission Helpline: 093180-29217, 18, 32, 31, 35, 38, 39, 41, 45,
Website: www.mau.ac.in, Email : admission@mau.ac.in

भारत की सबसे लंबी रेल सुरंग

पीर पंजाल टनल देश की अब तक की सबसे लंबी रेलवे टनल है। यह करीब 11 किमी. लंबी है, जो जम्मू-कश्मीर में बनाई गई है। यह काजीकुंड से बनिहाल तक बनी है। मणिपुर, इंफाल में 11.5 किमी. की टनल बनाई जा रही है। वैसे, भारतीय रेलवे की ओर से प्रस्तावित ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन पर सबसे लंबी सुरंग बनने जा रही है। यह 15.1 किलोमीटर लंबी होगी। बताया जा रहा है कि यह देश की सबसे लंबी रेल सुरंग होगी। इसे सौद से जनासू के बीच बनाया जाएगा।

दुनिया की सबसे लंबी रेल सुरंग

स्विट्जरलैंड में दुनिया की सबसे लंबी रेलवे सुरंग गॉटहार्ड से ट्रेन की आवाजाही हाल में शुरू हो गई। यह सुरंग 57 किमी. लंबी और 2.3 किमी. गहरी है। आइए जानते हैं इंजीनियरिंग के इस हैरत अंगेज कारनामे के बारे में-

स्विट्जरलैंड में स्थिति 57 किमी, लंबी गॉटहार्ड बेस टनल आम लोगों के लिए खोल दिया गया है। इस सबसे लंबी रेल टनल को बनाने में करीब 17 साल लगे और इस पर 80 हजार रूपये खर्च हुए है।

तकनीक का जादू

गॉटहार्ड प्रोजेक्ट सुरंग आधुनिक तकनीक की वजह से संभव हो सका। इसकी मुख्य ड्रिलिंग मशीन 410 मीटर लंबी, यानी फुटबॉल के चार मैदानों से भी बड़ी थी।

क्या है खासियत...

* गॉटहार्ड बेस टनल से प्रतिदिन 260 मालगाड़ियां और 65 पैसेंजर ट्रेनें गुजरेंगी। ट्रैक 200 किमी./घंटे की स्पीड से दौड़ सकेगी। यह आल्प्स पहाड़ के 2.3 किमी. नीचे बनी है।
* पहाड़ के ऊपर का तापमान जीरो डिग्री व सुरंग के अंदर का तापमान 46 डिग्री रहता है। सुरंग के ट्रैक के स्लैब को बनाने के लिए 125 मजदूरों ने 43800 घंटों तक काम किया।
* ज्यूरिख से नॉर्थ इटली के मिलान के बीच अब 2 घंटे चालीस मिनट का समय लगेगा। यह पले के मुकाबले एक घंटे कम होगा।

Registration/Admission Open for Classes IV to X

Boy's Residential School, Co-Education for Day Scholars Only
A Culture Oriented English Medium School

(Affiliated to C.B.S.E. Delhi)

Website: www.ssnkumarhatti.com

Run by:
Himachal Shiksha Samiti Shimla,
(A State unit of Vidya Bharti)

S.S.N.
PUBLIC SCHOOL
KUMARHATTI

Location: The Complex is situated on Barog bye-pass Road.
It is less than 2 km. from KUMARHATTI.

Managed by:
Jindal Charitable Trust
Nabha (Panjab)
01765-326661

J.K. Sharma
Principal
Ph.: 0177-266410, 94185-58030
e-mail: ssnkumarhatti@yahoo.in

हंसते-हंसते

प्रश्नोत्तरी

1. विदेश में सबसे बड़ा स्वामी नारायण जी का मंदिर किस देश में स्थित है?
2. कर्णावती, शहीद, वैशाली आदि नाम किनके हैं?
3. मॉरीशस में स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है और उस दिन का भारत में क्या महत्व है?
4. महात्मा बुद्ध के धर्मोपदेश किस भाषा में थे?
5. पहले एशियाई जिन्हें आलिम्पिक में स्वर्ण पदक मिला?
6. वह महान वैज्ञानिक जिनका जन्म क्रिसमस के दिन (25 दिसम्बर) को हुआ?
7. महात्मा बुद्ध का जन्म कहां हुआ था?
8. विश्व में आधे से ज्यादा लोगों के भोजन का आधार क्या है?
9. अशोक महान किसके पुत्र थे?
10. खजुराहो किस राजवंश की राजधानी थी?

बंदर केले तक कैसे पहुंचे?

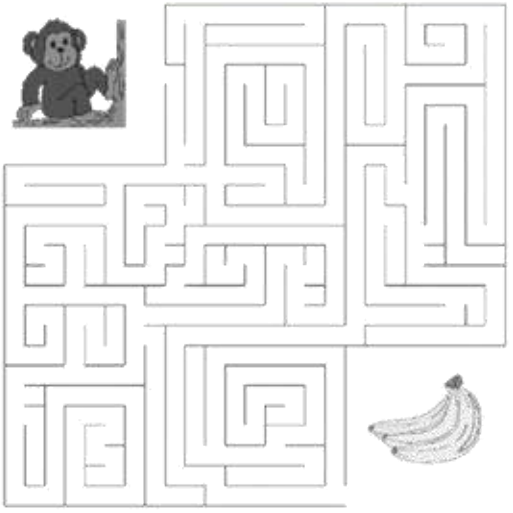

उत्तर: 1. लंदन, 2. एक्सप्रेस ट्रेनगाड़ियों के, 3. 12 मार्च को और उसी दिन गांधी जी ने दांडी यात्रा शुरू की थी, 4. मगधी, 5. नारमन पिचार्ड, 6. इसाक न्यूटन, 7. कपिलवस्तु में, 8. चावल, 9. बिन्दुसार के, 10. चंदेल।

Approved By GOVT. of H.P.

Registration No. 279,
Licence No.-HIMUDA LIC-03/2012.

Features & Facilities

- Ultra-modern Club House
- Gymnasium
- Swimming Pool
- Aerobic & Yoga Hall
- SPA, Sauna
- Putting Range
- Jogging Track
- Ample Parking Space
- Library
- Gated Community
- East Facing & Two-side Open Flats
- 80% Open Area
- Multi-tier 24x7 Security
- Fire Fighting System*
- Shopping Arcade
- Restaurants

1, 2, 3 BHK & Studio Apartments 12% assured return & lease option is available

PRESTIGE INFRADEVELOPERS PVT. LTD.

Corporate Office: SCO 210-11, 4th Floor, Sector 34-A, Chandigarh
Site Office: Chail Road, Kandaghat, Near Shimla, Distt. Solan (H.P.)
Tel: 0172-4000173, +91 872 509 2222
www.newyorkresidency.in

Loan Facility Available from: HDFC

Disclaimer : Perspective views shown are architectural view, subject to change. Sizes, features & amenities are indicative.

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION

Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।